Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठा और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 6

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

8 रजब 1443 हिज्री कमरी 10 तब्लीग़ 1401 हिज्री शम्सी 10 फरवरी 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएं और गुण

मदीना की तरफ़ रवाना होते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का पर अंतिम नज़र डाली और हसरत के साथ शहर को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया : हे मक्का की बस्ती तू मुझे सब जगहों से ज़्यादा प्रिय है

परन्तु तेरे लोग मुझे यहां रहने नहीं देते। उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी निहायत अफ़सोस के साथ कहा इन लोगों ने अपने नबी को निकाला है अब ये ज़रूर हलाक होंगे

माननीय मलिक फ़ारूक़ अहमद खोखर साहिब साबिक़ अमीर ज़िला मुल्तान, माननीय रहमतुल्लाह साहिब इंडोनेशिया और माननीय अल्हाज अब्दुल हमीद टॉक साहिब यारी पूरा कश्मीर की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 दिसम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुतबा में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ग़ार-ए-सौर के वाक़िया का वर्णन चल रहा था। इस वाक़िया के हवाले से जो ग़ार-ए-सौर में दुश्मन के पहुंच जाने का है क़ुरआन-ए-करीम में यह आयत जो है इस में अल्लाह तआला फ़रमाता है। इस का अनुवाद यह है कि अगर तुम इस रसूल की मदद न भी करो तो अल्लाह पहले भी उसकी मदद कर चुका है जब उसे उन लोगों ने जिन्हों ने कुफ़्र किया वतन से निकाल दिया था इस हाल में कि वह दो में से एक था जब वे दोनों ग़ार में थे और वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न कर निसंदेह अल्लाह हमारे साथ है। अत: अल्लाह ने उस पर अपन निशान नाज़िल किया और इस की ऐसे लश्करों से मदद की जिनको तुमने कभी नहीं देखा था और उसने उन लोगों की बात नीची कर दिखाई जिन्हों ने कुफ़्र किया था और बात अल्लाह ही की ग़ालिब होती है और अल्लाह कामिल ग़लबा वाला और बहुत हिक्मत वाला है।

क़ुरआन शरीफ़ में ग़ार-ए-सौर के वाक़िया के हवाले से यह वर्णन है। कुफ़्फ़ार-ए-मक्का ग़ार के दहाने पर खड़े बातें कर रहे थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उन्हें सुन कर घबरा गए कि अगर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यहां पकड़ लिया गया तो क्या बनेगा। सारा इस्लाम तो मानो उसी ज़ात-ए-बाबरकात से संलग्न था। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में इस घबराहट को जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को घबराहट पैदा हो रही है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۔ गम न कर अबू बकर! निसंदेह हमारा ख़ुदा हमारे साथ है। (उद्धरित ल शरह अज़्ज़रकानी अल्मवाहेबुल्लदुनिया, भाग 2 पृष्ठ 122-123 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पीछा करते हुए जब वे लोग ग़ार-ए-सौर के पहाड़ के पास पहुंचे तो सुराग़ निकालने वाले ने कहा मुझे पता नहीं चल रहा कि इस के बाद इन दोनों ने कहाँ अपने क़दम रखे हैं और जब वे ग़ार के क़रीब हो गए तो सुराग़ निकालने वाले ने कहा कि अल्लाह की क़सम जिसकी तलाश में तुम लोग आए हो वह यहां से आगे नहीं गया।

(तारीख़ अल् खमीस भाग 2 पृष्ठ 15 फी वक़ाए सुन्नतिल ऊला मिनल हिजरते दारुल क़ुतुब इल्मिया 2009 ई.)

ग़ार के दहाने पर इस सुराग़ निकालने वाले ने जब ये सारी बात की और किसी ने चाहा भी कि ग़ार के अंदर झांक कर देखा जाए तो उमय्यिह बिन ख़ल ने कठोर और गुस्से के अंदाज़ में कहा कि यह जाला (और दरख़्त) तो मैं मुहम्मद की पैदाइश से पहले यहां देख रहा हूँ (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)। तुम लोगों का दिमाग़ ख़राब हो गया है। वह यहां कहाँ हो सकता है और यहां से चलो किसी और जगह उसकी तलाश करें और यह कहते हुए सब लोग वहां से वापस चले आए।

(अल्मवाहेबुल्लदुनिया ले अलामह क़स्तलानी भाग 1 पृष्ठ 292-293 प्रकाशन अल् मक्तबा इस्लामिया बेरूत 2004 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में मक्का के क़ुरैश के ऐलान और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पीछा करने के बारे में जो वर्णन फ़रमाया है वह इस तरह है कि "उन्होंने आम ऐलान किया कि जो कोई मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को ज़िंदा या मुर्दा पकड़ कर लाएगा उस को एक सौ ऊंट इनाम दिए जावेंगे। इसलिए कई लोग इनाम की लालच में मक्का के चारों तरफ़ इधर उधर निकल गए। स्वयं क़ुरैश के सरदार भी सुराग़ लेते लेते आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे निकले और ठीक ग़ार-ए-सौर के मुँह पर जा पहुंचे। यहां पहुंच कर उनके सुराग़ देने वाले ने कहा कि बस सुराग़ इस से आगे नहीं चलता। इस लिए या तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यहीं कहीं पास ही छिपा हुआ है "(सल्लल्लाहो वसल्लम)" या फिर आसमान पर उड़ गया है। किसी ने कहा कोई व्यक्ति ज़रा इस ग़ार के अंदर जाकर भी देख आए परन्तु एक और व्यक्ति बोला कि वाह यह भी कोई अक़्ल की बात है। भला कोई व्यक्ति इस ग़ार में जाकर छिप सकता है। यह एक निहायत अँधेरी और ख़तरनाक जगह है और हम हमेशा से उसे इसी तरह देखते आए हैं। यह भी रिवायत आती है कि ग़ार के मुँह पर जो दरख़्त था। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अंदर तशरीफ़ ले जाने के बाद मकड़ी ने जाला बुन दिया था और ऐन मुँह के सामने की शाख़

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पर एक कबूतरी ने घोंसला बना कर अंडे दे दिए थे।'' मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़्याल में'' यह रिवायत तो कमज़ोर है लेकिन अगर ऐसा हुआ हो तो कदापि ताज्जुब की बात नहीं।'' कमज़ोर रिवायत है लेकिन ताज्जुब वाली बात कोई नहीं है क्योंकि'' मकड़ी कभी कभी चंद मिनट में एक वसीअ जगह पर जाला बुन देती है और कबूतरी को भी घोंसला तैयार करने और अंडे देने में कोई देर नहीं लगती। इसलिए अगर ख़ुदा तआला ने अपने रसूल की हिफ़ाज़त के लिए ऐसा तसर्रुफ़ फ़रमाया हो तो कदापि बईद नहीं है बल्कि उस वक़्त के लिहाज़ से ऐसा होना बिल्कुल सम्भावना के निकट है। बहरहाल क़ुरैश में से कोई व्यक्ति आगे नहीं बढ़ा और यहीं से सब लोग वापस चले गए।"

आगे लिखते हैं कि "रिवायत आती है कि क़ुरैश इस क़दर क़रीब पहुंच गए थे कि उनके पांव ग़ार के अंदर से नज़र आते थे और उनकी आवाज़ सुनाई देती थी।

इस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने घबरा कर परन्तु आहिस्ता से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरैश इतने क़रीब हैं कि उनके पांव नज़र आ रहे हैं और अगर वे ज़रा आगे हो कर झांकें तो हमको देख सकते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا अर्थात कदापि कोई फ़िक्र न करो। अल्लाह हमारे साथ है फिर फ़रमाया مَا ظَنُّكَ يَا اَبَا بَكْرٍ بِاثْنَيْنِ اَللّٰهُ ثَالِثُهُمَا अर्थात हे अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो! तुम उन दो शख़्सों के सम्बन्ध में क्या गुमान करते हो जिनके साथ तीसरा ख़ुदा है। एक और रिवायत में आता है कि जब क़ुरैश ग़ार के मुँह के पास पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो सख़्त घबरा गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी घबराहट को देखा तो तसल्ली दी कि कोई फ़िक्र की बात नहीं है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दर्द भरी आवाज़ में कहा : اِنْ قُتِلْتُ فَاَنَا رَجُلٌ وَاحِدٌ وَاِنْ قُتِلْتَ اَنْتَ هَلَكَتِ الْاُمَّةُ अर्थात हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर मैं मारा जाऊं तो में तो बस एक अकेली जान हूँ लेकिन अगर ख़ुदा-ना-ख़ासता आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कोई आँच आए तो फिर तो मानो सारी उम्मत की उम्मत मिट गई। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा तआला से इलहाम पा कर ये शब्द फ़रमाए कि لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا(अल् तौबा : 40) अर्थात हे अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कदापि कोई फ़िक्र न करो क्योंकि ख़ुदा हमारे साथ है और हम दोनों उसकी हिफ़ाज़त में हैं। अर्थात तुम तो मेरी वजह से फ़िक्रमंद हो और तुम्हें अपने जोश इख़लास में अपनी जान का कोई ग़म नहीं परन्तु ख़ुदा तआला उस वक़्त न सिर्फ मेरा मुहाफ़िज़ है बल्कि तुम्हारा भी और वह हम दोनों को दुश्मन के शर से महफ़ूज़ रखेगा

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ,पृष्ठ 237 से 239)

यह सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हवाला है और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु उसकी तफ़सीलात वर्णन करते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि "जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला की तरफ़ से हिज्रत का हुक्म मिला तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने साथ लेकर जबले सौर की तरफ़ तशरीफ़ ले गए जो मक्का से कोई छः सात मील की दूरी पर है और इस पहाड़ की चोटी पर एक ग़ार में छिप कर बैठ गए। सुबह जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपने घर में मौजूद नहीं और हर किस्म के पहरा के बावजूद मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफ़लता के साथ निकल गए हैं तो वह तुरंत आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलाश में निकल खड़े हुए और उन्होंने मक्का के चंद बेहतरीन खोजी जो पांव के निशानात पहचानने में बड़ी भारी प्रतिभा रखते थे अपने साथ लिए जो उन्हें जबले सौर तक ले आए और उन्होंने कहा कि बस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर हैं तो यहीं हैं। इस से आगे और कहीं निशान नहीं मिलता। उस वक़्त यह कैफ़ीयत थी कि दुश्मन ग़ार के ठीक सिर पर खड़ा था और ग़ार का मुँह तंग नहीं था जिस के अंदर झांकना मुश्किल हो परन्तु वह एक खुले मुँह की खुली ग़ार है जिसके अंदर झांक कर बड़ी आसानी से मालूम किया जा सकता था कि कोई व्यक्ति अंदर बैठा है या नहीं परन्तु ऐसी हालत में भी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कोई ख़ौफ़ तारी नहीं होता बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी क़ुव्वत-ए-क़ुदसिया की बरकत से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का दिल भी मज़बूत रहता है और वह मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों की तरह ये नहीं कहते कि हम पकड़े गए बल्कि उन्होंने अगर कुछ कहा तो यह कि हे रसूलुल्लाह! दुश्मन इतना क़रीब पहुंच चुका है कि वह अगर ज़रा भी नज़र नीची करे तो हमें देख सकता है परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया اُسْكُتْ يَا اَبَا بَكْرٍ اِثْنَانِ اللّٰهُ ثَالِثُهُمَا अबू बकर! ख़ामोश रहो। हम इस वक़्त दो नहीं बल्कि हमारे साथ एक तीसरा ख़ुदा भी है फिर वे क्योंकर हमें देख सकते हैं। इसलिए ऐसा ही हुआ। बावजूद इसके कि दुश्मन ग़ार के सिर पर पहुंच चुका था फिर भी उसे यह तौफ़ीक़ न मिली कि वह आगे बढ़कर झांक सकता और वह वहीं से बड़बड़ाते हुए तबाही की बातें करते हुए वापस चला गया। उद्देश्य इस वाक़िया का एक पहलू यह है कि मूसा के साथियों ने घबरा कर यह कहा कि हे मूसा हम पकड़े गए। मानो उन्होंने अपने साथ मूसा को भी लपेट लिया और ख़्याल किया कि अब हम सब फ़िरऔन की गिरिफ़्त में आने वाले हैं परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तवक्कुल ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथी पर भी ऐसा असर डाला कि इस की ज़बान से भी ये शब्द ना निकले कि हम पकड़े गए। बल्कि उसने कहा तो सिर्फ यह कि दुश्मन इतना क़रीब आ चुका है कि यदि वह हमें देखना चाहे तो देख सकता है परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात को भी बर्दाश्त नहीं किया और फ़रमाया कि ऐसा ख़्याल भी मत करो हम इस वक़्त दो नहीं बल्कि हमारे साथ एक और भी हस्ती है और वह हमार खुदा है।''

(तफ़सीर कबीर, भाग 7, पृष्ठ 147-146)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक और जगह फ़रमाते हैं "जब मक्का के लोगों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इंतिहा दर्जा के ज़ुल्म शुरू कर दीए और उनकी वजह से दीन की इशाअत में रोक पैदा होने लगी तो अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हुक्म दिया कि मक्का छोड़ कर चले जाएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी मक्का छोड़ने के लिए तैयार हो गए। इस से पहले कई दफ़ा उन्हें जाने के लिए कहा गया परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़कर जाने के लिए तैयार न हुए। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जाने लगे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने साथ ले लिया। जब आप रात के वक़्त रवाना हुए "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि ये" एक जगह जो मैं ने भी देखी है" हज के दौरान'' पहाड़ में मामूली सी ग़ार है जिसका मुँह दो तीन गज़ चौड़ा होगा उस में जा कर ठहर गए। जब मक्का के लोगों को पता लगा कि आप चले गए हैं तो उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पीछा किया। अरब में बड़े बड़े माहिर खोजी हुआ करते थे उनकी मदद से पीछा करने वाले ठीक इस मुक़ाम पर पहुंच गए जहां रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बैठे थे। ख़ुदा की क़ुदरत कि ग़ार के मुँह पर कुछ झाड़ियाँ उगी हुई थीं जिनकी शाख़ें आपस में मिली हुई थीं। अगर वे लोग शाख़ों को हटा कर अंदर देखते तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बैठे हुए नज़र आ जाते। जब खोजी वहां पहुंचे तो उन्होंने कहा कि या तो वः आसमान पर चढ़ गए हैं या यहां बैठे हैं इस से आगे नहीं गए। ख़्याल करो उस वक़्त कैसा नाज़ुक अवसर था। उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो घबराए परन्तु अपनी ज़ात के लिए नहीं बल्कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए। उस वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا घबराते क्यों हो ख़ुदा तआला हमारे साथ है। अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला को अपनी ज़ात में न देखते तो किस तरह मुम्किन था कि ऐसे नाज़ुक वक़्त में घबरा न जाते। क़वी से क़वी दिल गर्दा का इन्सान भी दुश्मन के ठीक सिर पर आ जाने से घबरा जाता है परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिल्कुल क़रीब बल्कि सिर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दुश्मन खड़े थे और दुश्मन भी वे जो तेराह साल से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जान लेने के दरपे थे और जिन्हें खोजी यह कह रहे थे कि या तो वह आसमान पर चढ़ गए हैं या यहां बैठे हैं। इस जगह से आगे नहीं गए। इस वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ख़ुदा तआला हमारे साथ है तुम्हें घबराने की क्या ज़रूरत है। यह ख़ुदा तआला का इर्फ़ान ही था जिसकी वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह कहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला को अपने अंदर देखते थे और समझते थे कि मेरी हलाकत से ख़ुदा तआला के इर्फ़ान की हलाकत हो जाएगी इस लिए कोई मुझे हलाक नहीं कर सकता।"

(इर्फ़ान-ए-इलाही और मुहब्बत बिल्लाह का आली मर्तबा, अनवारुल उलूम भाग 11 पृष्ठ 223 - 224)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी रिफ़ाक़त के लिए केवल एक ही व्यक्ति इख़तियार किया था अर्थात थोमा को जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ़ हिज्रत करने के वक़्त केवल हज़रत अबू बकर को इख़तियार किया था क्योंकि सलतनत रूमी हज़रत-ए-ईसा को बाग़ी क़रार दे चुकी थी और इसी जुर्म से भी क़ैसर के हुक्म से क़तल किया गया था क्योंकि वह दर-पर्दा हज़रत-ए-ईसा का हामी था और उसकी

औरत भी हज़रत-ए-ईसा की मुरीद थी। अत: ज़रूर था कि हज़रत-ए-ईसा उस मुल्क से गुप्त तौर पर निकलते। कोई क़ाफ़िला साथ न लेते। इस लिए उन्होंने इस सफ़र में केवल थोमा हव्वारी को साथ लिया जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना के सफ़र में सिर्फ अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को साथ लिया था और जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाक़ी अस्हाब मुख़्तलिफ़ राहों से मदीना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जा पहुंचे थे ऐसा ही हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारी मुख़्तलिफ़ राहों से मुख़्तलिफ़ वक़्तों में हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में जा पहुंचे थे।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पांच रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 402)

फिर एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का सिदक़ इस मुसीबत के वक़्त ज़ाहिर हुआ जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का घेराव किया गया। जबकि कुछ कुफ़्फ़ार की राय इख़राज की भी थी परन्तु असल उद्देश्य और कसरत राय आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल पर थी। ऐसी हालत में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने सिदक़ और वफ़ा का वह उदाहरण दिखलाया जो सदैव के लिए उदाहरण रहेगा।

इस मुसीबत की घड़ी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इंतिख़ाब ही हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सदाक़त और आला वफ़ादारी की एक ज़बरदस्त दलील है ... यही हाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इंतिख़ाब का था। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास सत्तर अस्सी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु मौजूद थे जिनमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे परन्तु इन सब में से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने अपनी रिफ़ाक़त के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का ही इंतिख़ाब किया। इस में क्या रहस्स्य है? बात यह है कि नबी ख़ुदा तआला की आँख से देखता है और उसका फ़हम अल्लाह तआला ही की तरफ़ से आता है इस लिए अल्लाह तआला ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कशफ़ और इलहाम से बता दिया कि इस काम के लिए सबसे बेहतर और उचित हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ही हैं। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उस कठोर समय में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हुए। यह वक़्त ख़तरनाक आज़माईश का था। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर जब इस किस्म का वक़्त आया तो उन के शागिर्द उन को छोड़कर भाग गए और एक ने लानत भी की। परन्तु सहाबा करामऊ में से हर एक ने पूरी वफ़ादारी का उदाहरण दिखाया। उद्देश्य हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपका पूरा साथ दिया और एक ग़ार में जिस को ग़ार-ए-सौर कहते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जा छपे। उपद्रवी कुफ़्फ़ार जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कष्ट देने के लिए मंसूबे कर चुके थे तलाश करते हुए उस ग़ार तक पहुंच गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि अब तो यह बिल्कुल सिर पर ही आ पहुंचे हैं और अगर किसी ने ज़रा पीछे निगाह की तो वह देख लेगा और हम पकड़े जाऐंगे। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۔ कुछ ग़म न खाओ अल्लाह तआला हमारे साथ है। इस शब्द पर ग़ौर करो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने साथ मिलाते हैं। इसलिए फ़रमाया إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۔ में आप दोनों शामिल हैं। अर्थात अल्लाह तआला तेरे और मेरे साथ है। अल्लाह तआला ने एक पल्ला पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और दूसरे पर हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को रखा है। इस वक़्त दोनों इबतिला में हैं क्योंकि यही वह मुक़ाम है जहां से या तो इस्लाम की बुनियाद पड़ने वाली है या ख़ातमा हो जाने वाला है। दुश्मन ग़ार पर मौजूद हैं और मुख़्तलिफ़ किस्म के राय हो रहे हैं। कुछ कहते हैं कहा सुराग की तलाशी करो क्योंकि निशान यहां तक ही आकर ख़त्म हो जाता है लेकिन उनमें से कुछ कहते हैं कि यहां इन्सान का गुज़र और दख़ल कैसे होगा? मकड़ी ने जाला तना हुआ है कबूतर ने अंडे दिए हुए हैं। इस किस्म की बातों की आवाज़ें अंदर पहुंच रही हैं और आप बड़ी सफ़ाई से उनको सुन रहे हैं। ऐसी हालत में दुश्मन आए हैं कि वह अंत करना चाहते हैं और दीवाने की तरह बढ़ते आए हैं लेकिन आपकी कमाल बहादुरी को देखो कि दुश्मन सिर पर है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपने सच्चे मित्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को कहते हैं: لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۔ ये शब्द बड़ी सफ़ाई के साथ ज़ाहिर करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़बान ही से फ़रमाया क्योंकि ये आवाज़ को चाहते हैं। इशारा से काम नहीं चलता। बाहर दुश्मन मश्वरा कर रहे हैं और अंदर ग़ार में ख़ादिम व सेवक भी बातों में लगे हुए हैं। इस बात की परवाह नहीं की गई कि दुश्मन आवाज़ सुन लेंगे। यह अल्लाह तआला पर पूर्ण ईमान और मार्फ़त का सबूत है। ख़ुदा तआला के वादों पर पूरा भरोसा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहादुरी के लिए तो यह उदाहरण है।" (मलफ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 376 से 378)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक और स्थान पर फ़रमाते हैं कि "अल्लाह जल्ला शानहु ने अपने नबी मासूम के महफ़ूज़ रखने के लिए यह अमर ख़ारिक़ आदत दिखलाया कि बावजूद इसके कि मुख़ालिफ़ीन उस ग़ार तक पहुंच गए थे जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने मित्र के साथ छुपे थे परन्तु वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देख न सके क्योंकि ख़ुदा तआला ने एक कबूतर का जोड़ा भेज दिया जिसने उसी रात ग़ार के दरवाज़ा पर घोसला बना दिया और अंडे भी दे दीए और इसी तरह इज़्न-ए-इलाही से मकड़ी ने इस ग़ार पर अपना घर बना दिया जिससे मुख़ालिफ़ लोग धोके में पड़ कर नाकाम वापस चले गए।"

(सुर्मा चशम आर्या, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 2, पृष्ठ 66 हाशिया)

फिर रिवायत में आता है कि पहले से तय-शुदा प्रोग्राम के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के होनहार साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रात को ग़ार-ए-सौर आते और दिन-भर की मक्का की सारी ख़बरें देते। हिदायात लेते और सुबह सुबह इस तौर से मक्का वापस चले जाते कि जैसे रात मक्का में ही गुज़ारी हो और साथ ही आमिर बिन फ़हीरा की ज़हानत है कि रात को दूध वाली बकरियों का दूध देने के बाद बकरियों के रेवड़ को इस तरह वापस लाते कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़दमों के निशानों को भी साथ साथ मिटा दिया जाता।

(सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब अल् अंसार, बाब हिजरतन्निबीहदीस नंबर 3905) (सीरतुं नबविय्या लेइब्ने हश्शाम भाग 1-2 पृष्ठ 289 ज़िक्र हिजरतिर्रसूल प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल् अरबी बेरूत 2008 ई.)

कुछ सीरत निगारों ने तो यह भी वर्णन किया है कि हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा रोज़ाना खाना लेकर आया करती थीं। (सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 54 अरज़ रसूलुल्लाह नफ्सहू दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002) लेकिन यह जो है बईद अज़ क़ियास बात है। कुछ की यह राय सही है कि इस ख़तरे के आलम में एक महिला का रोज़ाना इधर आना रहस्य ज़ाहिर करने के मुतरादिफ़ है और जबकि अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रोज़ाना आ रहे थे तो फिर हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के खाना लाने की क्या ज़रूरत हो सकती थी। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है। लेकिन तीन दिन इसी तरह गुज़र गए। मक्का वाले जब क़रीबी जगहों की तलाश से फ़ारिग़ हो कर नाकाम हो गए तो उन्होंने आपस में मुशावरत से एक बहुत बड़े इनाम का ऐलान करते हुए इर्द-गिर्द की बस्तियों में ढंडोरची भेज दिए जो ऐलान कर रहे थे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को ज़िंदा या मुर्दा लाने की सूरत में एक सौ ऊंट इनाम दिया जाएगा। इतने बड़े इनाम की लालच ने कई लोगों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलाश के लिए फिर से ताज़ा-दम कर दिया।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 58 الهجرة الى المدينة दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002ई.)

दूसरी तरफ़ तीन दिन मुकम्मल होने पर वादे के अनुसार अब्दुल्लाह बिन उरयकित ऊंट लेकर आ गया। सही बुख़ारी की एक रिवायत में यह वर्णन है कि अब्दुल्लाह बिन उरयकित से यह वादा लिया गया था कि वे तीन दिन के बाद सुबह के वक़्त ऊंट लेकर पहुँचेगा।(सीरतुं नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 344 हिजरत रसूलुल्लाह प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) (सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अल् अंसार बाब **हिजरة** النبی ﷺ ... सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ... हदीस नंबर 3905)(फ़तह अलबारी शरह सही अल् बुखारी भाग 7 पृष्ठ 238 दारुल मारूफ़ बेरूत)

इस रिवायत से यह तास्सुर मिलता है कि ग़ार-ए-सौर से मदीना की तरफ़ रवानगी सुबह के वक़्त शुरू हुई थी परन्तु बुख़ारी की ही दूसरी रिवायत में यह वज़ाहत मौजूद है कि सफ़र रात के वक़्त शुरू हुआ था। इसलिए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अब्दुल्लाह बिन उरयकित का वर्णन करते हुए यह लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे पहले से अपनी ऊंटनियां सपुर्द कर रखी थीं और समझा रखा था कि तीन रात के बाद तीसरे दिन की सुबह को ऊंटनियां लेकर ग़ार-ए-सौर में पहुंच जाए। इसलिए वे हसब-ए-क़रारदाद पहुंच गया। यह बुख़ारी की मशहूर रिवायत है परन्तु इतिहास लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात को रवाना हुए थे और ख़ुद बुख़ारी की ही एक दूसरी रिवायत में इस की तसदीक़ पाई जाती है। और सम्भव भी यही है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रात को रवाना हों।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 239-240)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैर की रात यक्म रबीउल अव्वल को ग़ार से निकल कर रवाना हुए। इब्न-ए-साद के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रबीउल अव्वल की चार तारीख़ को पीर की रात ग़ार से रवाना हुए।

(अलख़मीस भाग 2 पृष्ठ 18 वर्णन خروجه ﷺ مع ابی بکر من مکة... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

पहली तारीख़ ख़मीस की रिवायत है। सही बुख़ारी के शारेह अल्लामा इब्ने हिज्र अस्किलानी लिखते हैं कि इमाम हाकिम ने कहा कि इस बारे में नियमित विचार हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मक्का से निकलना पीर के दिन था और मदीना में दाख़िल होना भी पीर के दिन था सिवाए मुहम्मद बिन मूसा खावारज़मी के जिसने कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से जुमेरात के दिन निकले। अल्लामा इब्ने हिज्राँ रिवायत में समानता करते हुए लिखते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से तो जुमेरात को निकले थे और ग़ार में जुमा, हफ़्ता और इतवार, तीन रातें क़ियाम करने के बाद पीर की रात को मदीना के लिए रवाना हुए।

(फ़तह अल् बारी शरह सही अल् बुखारी हिज्र भाग 7 पृष्ठ 299प्रकाशन क़दीमी कुतुब ख़ाना सामने आराम बाग़ कराची)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक ऊंटनी जिसका नाम कस्वा मिल्ता है इस पर सवार हुए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी ऊंटनी पर अपने साथ आमिर बिन फ़हीरा को सवार किया और उरयकित अपने ऊंट पर सवार हुआ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास घर में कुल सम्पत्ति पाँच या छ: हज़ार दिरहम थी वह भी साथ ली। कुछ रिवायत के अनुसार आमिर बिन फ़हीरा और हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हो खाना लेकर आ गईं और जिस में बकरी का भुना हुआ गोश्त था लेकिन यहां पहुंच कर ख़्याल आया कि खाना और मशकीज़ा बाँधने के लिए कोई कपड़ा इत्यादि नहीं है तो हज़रत अस्मा ने अपना कमर बंध खोल कर दो हिस्से किए। एक से खाना और एक से मश्कीज़े का मुँह बाँधा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा को जन्नत में दो कमर बंधों की बशारत दी और उन सबको रुख़स्त किया और यह दुआ करते हुए सफ़र किया: اَللّٰهُمَّ اصْحَبْنِیْ فِیْ سَفَرِیْ ، وَاخْلُفْنِیْ فِیْ أَهْلِیْ कि हे अल्लाह मेरे सफ़र में तू मेरा साथी हो जा और मेरे अहल में मेरा क़ायम मक़ाम हो जा। (محمدرسول الله والذین معه از عبدالحمید جودة السحار भाग 3 पृष्ठ 61 प्रकाशन मिस्र) (सीरतुं नबविय्या लेइब्ने हश्शाम पृष्ठ 345 दारुल क़ुतुबइल्मिया बेरूत 2001 ई.)

जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि कमर बंध से खाना बाँधने का वाक़िया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर से चलते वक़्त हुआ था लेकिन बहरहाल यहां भी यह वर्णन मिलता है। तारीख़ में दो अवसरों पर यह वर्णन मिलता है। कुछ के नज़दीक उस वक़्त जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिज्रत के लिए मक्का में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर से ग़ार-ए-सौर के लिए रवाना हो रहे थे और कुछ के नज़दीक उस वक़्त जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ार-ए-सौर से मदीना के लिए रवाना हो रहे थे। बहरहाल ये दोनों वर्णन मिलते हैं लेकिन बुख़ारी में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हो ने सफ़र हिज्रत की जो तफ़सील वर्णन फ़रमाई है इस रिवायत के तसलसुल से यही तास्सुर मिलता है कि ये हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर से रवानगी का वाक़िया है। लिहाज़ा बुख़ारी की रिवायत को प्राथमिकता देना ज़्यादा मुनासिब होगा क्योंकि प्रथम तो ग़ार-ए-सौर के क़ियाम को जिस तरह गुप्त रखा गया था वहां हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा का खाना लेकर जाना दृष्टिगत हो सकता है जबकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत आमिर बिन फहीरा रज़ियल्लाहु अन्हो ये दोनों मर्द रोज़ाना छुप कर जा रहे थे तो फिर एक महिला का जाना हिफ़ाज़त और एहतियात के तक़ाज़ों के मुनाफ़ी नज़र आता है। बहरहाल घर में भी कमर बंध से खाना बाँधने का जो वाक़िया है इस में हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा की कुर्बानी और अत्यधिक प्रेम की झलक भी नुमायां होती है कि बजाय इसके कि इस वक़्त खाना बाँधने के लिए कोई और चीज़ ढूढ़ने में वक़्त ज़ाए करें (अपना कमरबंद खोल कर खाना बांध दिया)। ग़ार में तो कहा जा सकता है कि ग़ार में वाक़िया हुआ होगा क्योंकि वहां कोई चीज़ नहीं थी लेकिन घर में भी यह वाक़िया हो सकता है कि फ़ौरी तौर पर कोई चीज़ न मिली हो और वक़्त ज़ाए होने का संदेह हो तो अपना कमरबंद खोल कर खाना बांध कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रुख़स्त किया। इसलिए बुख़ारी की रिवायत के अनुसार यह ज़्यादा दरुस्त मालूम होता है कि खाना बाँधने का वाक़िया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर से रुख़स्त होने का होगा न कि ग़ार-ए-सौर से मदीना की तरफ़ सफ़र के आग़ाज़ का। बहरहाल अल्लाह अधिक जानने वाला है।

हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हिज्रत के लिए निकले तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना सारा माल साथ ले लिया जो पाँच या छ: हज़ार दिरहम था।

आप रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि हमारे दादा अबू कहाफ़ा हमारे पास आए। इस वक़्त उनकी दृष्टि जा चुकी थी। उन्होंने कहा अल्लाह की क़सम मेरा ख़्याल है कि वह अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी ज़ात के साथ साथ अपने माल के माध्यम से भी तुम लोगों को मुसीबत में डाल गया है। इस पर हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं मैं ने कहा कि नहीं दादा-जान कदापि नहीं। वे तो हमारे लिए बहुत सा माल छोड़ गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने कुछ पत्थर लिए और उनको घर के इस रोशन दान में रख दिया जहां मेरे माता पिता माल रखा करते थे और फिर मैं ने उन पर कपड़ा डाल दिया और अपने दादा का हाथ पकड़ कर मैं ने कहा दादा-जान इस माल पर अपना हाथ तो रखें। अत: उन्होंने इस पर अपना हाथ रखा और कहा कोई हर्ज नहीं यदि वह तुम्हारे लिए इतना कुछ छोड़कर गया है तो फिर उसने अच्छा किया है। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं अल्लाह की क़सम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हमारे लिए कुछ भी छोड़कर नहीं गए थे परन्तु मैं चाहती थी कि इस बुज़ुर्ग को इस तरह संतोष दिला सकूं।

(सीरतुं नबविय्या लेइब्ने हश्शाम 345 هجرة الرسولﷺ, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ार-ए-सौर से रवानगी का वर्णन करते हुए लिखा है कि "ग़ार-ए-सौर से निकल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक ऊंटनी पर जिसका नाम कुछ रिवायात में अल् कस्वा वर्णन हुआ है सवार हो गए और दूसरे पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उनका ख़ादिम आमिर बिन फ़हीरा सवार हुए। रवाना होते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का की तरफ़ अंतिम नज़र डाली और हसरत के शब्द फ़रमाए : हे मक्का की बस्ती तू मुझे सब जगहों से ज़्यादा प्रिय है परन्तु तेरे लोग मुझे यहां रहने नहीं देते। इस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। इन लोगों ने अपने नबी को निकाला है। अब ये ज़रूर हलाक होंगे

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 240)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "दो दिन ईसी ग़ार में इंतिज़ार करने के बाद पहले से तै की हुई तजवीज़ के अनुसार रात के वक़्त ग़ार के पास सवारियां पहुंचाई गईं और दो तेज़-रफ़्तार ऊंटनियों पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथी रवाना हुए। एक ऊंटनी पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और रस्ता दिखाने वाला आदमी सवार हुआ।" यह भी एक रिवायत में आता है कि दोनों एक सवारी में थे। एक में यह कि तीन ऊंटनियां थीं। बहरहाल और "दूसरी ऊंटनी पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उनका सेवक आमिर बिन फ़हीरा सवार हुए। मदीना की तरफ़ रवाना होने से पहले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना मुँह मक्का की तरफ़ किया। इस मुक़द्दस शहर पर जिसमें आप पैदा हुए, जिसमें आप अवतरित हुए और जिसमें हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ज़माना से आपके बाप दादा रहते चले आए थे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंतिम नज़र डाली और हार्दिक इच्छा के साथ शहर को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया : हे मक्का की बस्ती तू मुझे सब जगहों से ज़्यादा अज़ीज़ है परन्तु तेरे लोग मुझे यहां रहने नहीं देते। इस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी निहायत अफ़सोस के साथ कहा इन लोगों ने अपने नबी को निकाला है अब यह ज़रूर हलाक होंगे

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 223-224)(सीरतुं नबविय्या लेइब्ने हश्शाम, बाब हिजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 344 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

एक रिवायत के अनुसार जब जुहफ़ा स्थान पर पहुंचे, जुह मक्का से तक़रीबन 82 मील की दूरी पर है तो यह आयत नाज़िल हुई إِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَادُّكَ إِلٰی مَعَادٍ (अल् किसस : 86) निसंदेह वह जिसने तुझ पर क़ुरआन को फ़र्ज़ किया है तुझे ज़रूर एक वापस आने की जगह की तरफ़ वापस ले आएगा।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

(محمدرسول الله والذين معه از عبدالحميد جودة السحار भाग 3 पृष्ठ 64 प्रकाशन मिस्र)(शरह ज़रक़ानी अली मुवाहिब लिल् दुनिया, भाग 2 पृष्ठ 172 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

सारी रात यह सफ़र जारी रहा यहां तक कि जब दोपहर का वक़्त होने लगा तो एक चट्टान के साय में क़ाफ़िला विश्राम के लिए रुका। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बिस्तर तैयार किया और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आराम फ़रमाने की दरख़ास्त की। इसलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेट गए। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बाहर निकल गए ता देखें कि पीछा करने वालों में से कोई आ तो नहीं रहा। इतने में दूर से बकरियों का एक चरवाहा भी साय की तलाश में इधर आ निकला। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं ने इस से पूछा लड़के तुम किस के ग़ुलाम हो? उसने कहा क़ुरैश के एक व्यक्ति का हूँ। उसने उसका नाम लिया और मैं ने इस को पहचान लिया। मैं ने कहा क्या तुम्हारी बकरियों में कुछ दूध है। उसने कहा हाँ। मैं ने कहा क्या तुम हमारे लिए कुछ दूध दोहो गे? उसने कहा हाँ। इसलिए मैं ने उसे दूध दोहने के लिए कहा। उसने अपनी बकरियों में से एक बकरी की टांग अपनी पिंडली और रान के मध्य पकड़ ली। फिर मैं ने उस को कहा कि पहले थन को अच्छी तरह साफ़ करो। फिर अपनी निगरानी में दूध बर्तन में डलवाया। इस में पानी डालाता कि दूध की शिद्दत कुछ कम हो जाए और दूध आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया। कुछ रिवायत में है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो दूध लेकर हाज़िर हुए तो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अभी तक सोए हुए थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुनासिब नहीं समझा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आराम में रूकावट उत्पन की जाए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बेदार होने का इंतिज़ार करने लगे। बेदार होने पर दूध पेश किया और अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह पियें। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उतना पिया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं ख़ुश हो गया। फिर मैं ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! निकलने का वक़्त आ पहुंचा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ। या एक रिवायत में यह वर्णन है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब सफ़र दुबारा शुरू किया जाए? अर्ज़ किया गया जी मेरे आक़ा। इसलिए सफ़र फिर शुरू हुआ।(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ायलुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम بَابُ مَنَاقِبِ الْمُهَاجِرِينَ وَفَضْلِهِمْ हदीस नंबर 3652)(सब्लुल हुदा वर्रिशाद भाग 3 पृष्ठ 243-244 جماع ابواب الهجرة الى المدينة... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

सुराक़ा बिन मालिक का पीछा उसका वाक़िया यह है कि उरयकित जैसा माहिर रास्ता शनास की निगरानी में साहिली बस्तियों की जानिब से मदीना की तरफ़ यह सफ़र शुरू किया गया था जो कि मदीना के उमूमी रास्ते से मुख़्तलिफ़ रूट (route) था। मक्का और इस के इर्द-गिर्द की बस्तियों में सौ ऊंट इनाम का ऐलान आम हो चुका था और बहुत से लोग चाहते थे कि ये गिरां क़दर इनाम उन्हें मिले। सुराका बिन मालिक वर्णन करते हैं, बाद में ये मुस्लमान हो गए थे और इस्लाम लाने के बाद उन्होंने ख़ुद यह वाक़िया वर्णन किया है कि हमारे पास कुफ़्फ़ार-ए-क़ुरैश का संदेशक आए। इन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हर दो की दियत निर्धारित की हुई थी उन लोगों के लिए जो इन दोनों को क़तल करेगा या उन्हें ज़िंदा पकड़ लेगा।

सुराक़ा कहते हैं मैं अपनी क़ौम बनू मुद्लज् की एक मज्लिस में बैठा हुआ था कि एक व्यक्ति उनके सामने से आया और हमारे पास खड़ा हुआ जबकि हम बैठे हुए थे। उसने कहा कि सुराक़ा! मैं ने साहिल की तरफ़ कुछ साय से देखे हैं या कहा कि तीन अफ़राद का एक क़ाफ़िला जाते देखा है और मेरा ख़्याल है कि हो न हो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही हैं। सुराक़ा बिन मालिक कहते हैं कि मैं जान गया कि वाक़ई यह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही क़ाफ़िला होगा लेकिन मैं नहीं चाहता था कि मेरे साथ कोई और इस इनाम में शरीक हो। इसलिए मैं ने तुरंत अवसर की नज़ाकत को सँभाला और इस बताने वाले को आँख से इशारा किया कि वह ख़ामोश रहे और ख़ुद मैं ने कहा कि नहीं नहीं वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क़ाफ़िला नहीं हो सकता बल्कि जिन लोगों का तुम वर्णन कर रहे हो वह तो अभी हमारे सामने से गुज़र कर गए हैं। वह बनू अमुक हैं जो अपनी गुमशुदा ऊंटनी की तलाश में जा रहे थे। सुराक़ा कहते हैं कि मैं कुछ देर उस मज्लिस में रहा ताकि किसी को शक न गुज़रे और फिर अपनी एक ख़ादिमा को कहा कि वह मेरी अमुक तेज़-रफ़्तार घोड़ी को लेकर घर के पीछे अमुक जगह पर खड़ी हो और मेरा इंतिज़ार करे और कुछ देर के बाद वह ख़ुद वहां पहुंच गया और वर्णन करते हैं कि मैंने फ़ाल निकाली लेकिन इस सफ़र के ख़िलाफ़ निकली लेकिन मैंने पर्वा नहीं की और घोड़ी को ऐड लगा कर हवा हो गया और तेज़ी से उस क़ाफ़िले का पीछा करने लगा जो मैं समझता था कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही क़ाफ़िला है। सुराक़ा कहते हैं कि मंज़िल पर मंज़िलें मारते हुए मैं जल्द ही इस क़ाफ़िले के क़रीब पहुंच गया और अभी कुछ ही फ़ासले पर था कि मेरी घोड़ी ने ख़िलाफ़ मामूल ठोकर खाई कि मैं उससे गिर पड़ा। फिर मैं उठ खड़ा हुआ और मैं ने फ़ाल निकाली और फ़ाल फिर मेरे इरादे के ख़िलाफ़ निकली परन्तु मैं चाहता था कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वापिस लेकर जाऊं और सौ ऊंटनियों का इनाम हासिल करूँ। फिर मैं उठा और घोड़ी पर सवार हुआ और अब मैं इतना क़रीब हो चुका था कि ना केवल मैं यह पहचान चुका था कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं बल्कि मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ पढ़ने की आवाज़ भी आ रही थी कि इतने में मेरी घोड़ी ने बुरी तरह ठोकर खाई और उसकी टांगें रेत में धँस गईं और मैं उससे गिर पड़ा। फिर मैं ने घोड़ी को डाँटा और उठ खड़ा हुआ अर्थात घोड़ी को बुरा भला कहा और उठ खड़ा हुआ और घोड़ी अपनी टांगें ज़मीन से निकाल नहीं सकती थी। आख़िर जब वह सीधी खड़ी हुई तो इस की दोनों टांगों से गर्द उठकर फ़िज़ा में धुएं की तरह फैल गई। इतनी धंसी हुई थी कि जब मिट्टी से या रेत से टांगें बाहर निकालें तो गर्द अड़ी। कहते हैं अब मैंने दुबारा तीरों से फ़ाल निकाली तो वही निकला जिसे मैं नापसंद करता था। मैंने वहीं से अमान की आवाज़ लगाई और कहा कि मेरी तरफ़ से आप लोगों को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचेगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि उससे पूछो कि वह क्या चाहता है? उसने कहा कि मैं सुराक़ा हूँ और आप लोगों से बात करना चाहता हूँ। इस पर वह रुक गए। सुराक़ा बताने लगा कि मक्का वालों ने उनको ज़िंदा या मुर्दा पकड़े जाने पर सौ ऊंट इनाम निर्धारित किया है और मैं इसी लालच में आपका पीछा करते हुए आया हूँ लेकिन जो कुछ मेरे साथ हुआ है उससे मैं इस यक़ीन पर क़ायम हूँ कि मेरा पीछा दरुस्त नहीं है। उसने नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में ज़ाद-ए-राह इत्यादि की पेशकश भी की लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बूल न फ़रमाया। बस यह कहा कि हमारे बारे में किसी को न बताना। उसने यह वादा किया और साथ यह भी अर्ज़ किया कि मुझे यक़ीन है कि आप एक दिन बादशाहत हासिल कर लेंगे। मुझे कोई अह्द-ओ-पैमान लिख दें कि इस वक़्त जब मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ तो मुझ से इज़्ज़त-ओ-एहतिराम से पेश आया जाए। कुछ रिवायत के अनुसार उसने अमान की तहरीर के लिए दरख़ास्त की थी। इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर उस को वह तहरीर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने और एक रिवायत के अनुसार आमिर बिन फहीरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिख कर दी और वह यह तहरीर लेकर वापस आ गया। (सही अल् बुखारी, किताब मनाकिब, ب هجرة النبیﷺ و اصحابه الى المدينة. रिवायत नंबर 3906)(सब्लुल हुदा वर्रिशाद, भाग 3 पृष्ठ 248 قصة سراقة... दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)(मुहम्मद रसूलुल्लाह والذين معه. भाग 3, पृष्ठ 64-65 प्रकाशन मिस्र)

यह वर्णन इंशा अल्लाह अभी आइन्दा भी चलेगा। कल इंशा अल्लाह नया साल भी शुरू हो रहा है।

अल्लाह तआला आने वाले वर्ष को अफ़राद जमाअत के लिए, जमाअत के लिए जमाअत के दृष्टिकोण के लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए। हर किस्म के उपद्रव से जमाअत को महफ़ूज़ रखे और दुश्मन के जो जमाअत के ख़िलाफ़ मंसूबे हैं हर मंसूबे को ख़ाक में मिला दे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम से जो अल्लाह तआला ने वादे किए हैं उन वादों को हम भी अपनी ज़िंदगियों में कसरत से पूरा होता हुआ देखें। हमें अल्लाह तआला ये नज़्ज़ारे भी दिखाए। अत: बहुत दुआएं करते रहीं।

नए साल में दुआओं के साथ दाख़िल हों। तहज्जुद का भी ख़ास एहतिमाम करें। कुछ मसाजिद में हो भी रहा है। बाक़ी जहां नहीं है वहां भी करना चाहिए। इन्फ़िरादी तौर पर अगर इजतिमाई तौर पर नहीं तो इन्फ़िरादी तौर पर भी और घरों में भी तहज्जुद

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

की नमाज़ ज़रूर खासतौर पर अदा करनी चाहिए। दुआ करनी चाहिए। अव्वल तो यह मुस्तक़िल आदत होनी चाहिए लेकिन कल से जब पढ़ें या आज रात से तो इस की भी कोशिश करें कि ज़िंदगियों का मुस्तक़िल हिस्सा बन जाए। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ भी दे।

ये दुआएं भी दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार के अतिरिक्त कसरत से पढ़ा करें कि رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ (आले इमरान : 9) हे हमारे रब हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे बाद इसके कि तू हमें हिदायत दे चुका हो और हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता कर। निसंदेह तू ही बहुत अता करने वाला है। फिर यह भी दुआ पढ़ें رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (आले इमरान : 148) कि हे हमारे रब हमारे गुनाह बख़श दे और अपने मामले में हमारी ज़्यादती भी और हमारे क़दमों को सबात बख़श और हमें काफ़िर क़ौम के ख़िलाफ़ नुसरत अता कर। अल्लाह तआला हर अहमदी को इस की तौफ़ीक़ दे।

मैं नमाज़ों के बाद कुछ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। इस वक़्त उनका वर्णन भी करना चाहता हूँ। पहला वर्णन माननीय मलिक फ़ारूक़ अहमद खोखर साहिब का है। यह ज़िला मुल्तान के अमीर रहे हुए हैं। 18 दिसंबर को अस्सी 80) वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पिता माननीय मलिक उम्र अली खोखर साहिब थे जो रईस मुल्तान कहलाते थे और माता सय्यदा नुसरत जहां बेग़म साहिबा। सय्यदा बेग़म के नाम से जानी जाती थीं। हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की यह बेटी थीं। हज़रत मलिक उम्र अली साहिब ने अपनी जवानी में अहमदियत क़बूल की थी। हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में क़ादियान जा कर उन्होंने बैअत की सआदत हासिल की थी। मलिक उम्र अली साहिब की वफ़ात जल्दी हो गई थी। उस वक़्त मलिक फ़ारूक़ अहमद साहिब तक़रीबन बीस बाईस वर्ष की उम्र के थे। जवान थे। मलिक साहिब का अतिरिक्त ज़मीनों के कराची में कुछ बिज़नस था। इसको उन्होंने बड़ा अहसन रंग में सँभाला और अपनी माता, दो माताएं थीं उनकी और बहन भाईयों की परवरिश की। मलिक फ़ारूक़ खोखर साहिब लंबा अरसा क़ायद मज्लिस ख़ुद्दामूल अहमदिया ज़िला मुल्तान और फिर क़ायद इलाक़ा मुल्तान की हैसियत से काम करते रहे। 1980 ई. से 85 ई. तक बतौर अमीर ज़िला मुल्तान ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। इस दौरान में आप अमीर-ए-शहर मुल्तान भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे। उनकी शादी 1968 ई. में हज़रत मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहिब की बेटी दुर्दाना साहिबा से हुई थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने निकाह पढ़ाया था। अल्लाह तआला ने आपको एक बेटे और पाँच बेटियों से नवाज़ा।

आपकी पत्नी वर्णन करती हैं कि बहुत ही मुहब्बत करने वाले और ख़्याल रखने वाले थे। छोटी छोटी बातों का ख़्याल रखते। बाक़ायदा तहज्जुद पढ़ते और मुझे भी रोज़ाना तहज्जुद के लिए उठाते थे। जिस दिन वफ़ात हुई है उस रात भी नफ़ल पढ़े और नमाज़ पढ़ी और फिर सो गए। हर वक़त बावुज़ू रहने की कोशिश करते थे। कहते हैं जब अभी अमीर जमाअत नहीं थे तो किसी अहमदी का कोई मसला होता, किसी वक़्त भी किसी का काम आ जाता या उसका फ़ोन आ जाता तो फ़ौरी तौर पर काम के लिए तैयार होते। कहती हैं जब अमीर जमाअत बने तो मुझे यह हुक्म था कि हर वक़त खाने और चाय का इंतिज़ाम तैयार रहना चाहिए किसी वक़्त भी कोई मेहमान आ सकता है। कहती हैं मुझे नहीं याद कभी मेरा घर मेहमानों से ख़ाली हो या कोई न कोई मुस्तक़िल आ के ठहरा न हो। कुछ मुरब्बियान को भी घर में ठहराते थे। घर जो था वह दफ़्तर ही बना रहता था। बहुत खुले दिल के और दिल से मुहब्बत करने वाले थे। सब ग़ैर अहमदी रिश्तेदार बल्कि पूरा खोखर ख़ानदान उनकी बहुत इज़्ज़त और एहतिराम करता था। मुहब्बत करता था। उन्होंने हमेशा उनसे ख़ूब निभाया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत बहुत अच्छी थी।

उनके बेटे तल्हा कहते हैं कि अपनी दोनों माओं का बहुत ख़्याल रखा और कभी फ़र्क़ नहीं किया और अपनी समस्त बहनों भाईयों की शादियां भी ख़ुद ही करवाईं। उनका घर हमेशा उनके दिल की तरह हर एक के लिए खुला था खासतौर पर वाकफ़ीन जमाअत के लिए। उनका एक घर खेरा गली मरी में था और कहा करते थे यह तो मैंने बनाया ही जमाअत के लिए है। कभी किसी को इंकार नहीं किया जो भी वहां जा के रहना चाहता था रहता था वहां। यह कहते हैं कि 1984 ई. के हुकूमती आर्डीनैंस के बाद के आज़माईशी दौर में ख़ुदा के फ़ज़ल से बहादुराना personality से मुल्तान ज़िला और शहर के समस्त साथियों को हमेशा हिम्मत दिलाते रहे, कभी कमज़ोर नहीं पड़ने दिया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह का जो हिज्रत का सफ़र था। अल्लाह के फ़ज़ल से उनको हुज़ूर के क़ाफ़िला में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली और एक जगह एक अवसर पर उन्होंने क़ाफ़िले को लीड भी किया, सही रस्ता गाईड किया। उनके बेटे लिखते हैं कि अब्बा की इमारत के दौरान हमारा घर-घर से ज़्यादा दफ़्तर बना होता था। ख़ूब रौनक होती थी। ज़मीनों का काम अपने छोटे भाई के सपुर्द कर दिया और अपना समस्त वक़्त दीन के लिए वक़्फ़ कर दिया। प्रत्येक बे-तकल्लुफ़ी से आया करता था। बे तकल्लुफ़ तबीयत थी। ग़ैर अज़ जमाअत रिश्तेदारों की माली मदद भी किया करते थे। कहते हैं कि उनके जनाज़े पर हमारे कुछ रिश्तेदार आए तो रोते हुए कहने लगे आज हम लावारिस हो गए हैं क्योंकि उनकी मदद किया करते थे। कहते हैं हमेशा हमें नमाज़ की तलक़ीन करते खासतौर पर फ़ज्र की नमाज़ की। उनकी छोटी बेटी फ़ायज़ा कहती हैं कि अब्बा का अल्लाह पर तवक्कुल हमारे लिए एक मिसाल थी। हर तरह का ज़माना देखा। नौजवानी में यतीम हुए। हर तरह के हालात देखे। तंगी भी और आराम भी परन्तु मैं ने बचपन से देखा है कि अब्बा ने अल्लाह पर तवक्कुल का बरमला इज़हार किया और हमेशा कहते कि मेरे हर काम अल्लाह तआला ख़ुद करता है। कहती हैं कि अब्बा को ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत थी और ख़िलाफ़त का वर्णन करते हुए रो पड़ते थे और एक इबतिला भी उन पर आया और इस को भी उन्होंने बड़े सब्र और दुआओं के साथ गुज़ारा।

उनके छोटे भाई मलिक तारिक़ अली खोखर जो दूसरी माता से थे वह कहते हैं कि मेरी उम्र नौ साल थी जब मेरे पिता फ़ौत हुए और यह भाई जान मेरे बड़े भाई मलिक फ़ारूक़ जो थे यहा 22 वर्ष के नौजवान थे लेकिन उन्होंने हमें बाप की तरह सँभाल लिया और समस्त उम्र मुझे कभी बाप की कमी महसूस नहीं होने दी। फिर यह लिखते हैं कि ग़ैर अज़ जमाअत रिश्तेदारों पर उनका ख़ास रोब था और उनका यह ख़्याल भी बहुत रखते थे। बेशुमार अहमदी ख़ानदानों की कफ़ालत कर रहे थे। बहुत से बच्चों को शिक्षा दिलवा कर बरसर-ए रोज़गार किया। फिर कहते हैं कि मेरे भाई हर ज़रूरतमंद को क़र्ज़ा देते थे और कभी वापसी का मुतालिबा नहीं किया। हमेशा इस नीयत से देते थे कि क़र्ज़ा हसना है।

बहुत से नौ मुबाईन कहते हैं कि हमें अहमदियत में दाख़िल होने के बाद मलिक फ़ारूक़ अहमद खोखर साहिब ने अपनों की तरह सँभाल कर हमारी ज़रूरियात का ख़्याल रखा। अस्सी वर्ष के हो गए थे लेकिन पिछले दो साल से कहते हैं कि उनको फ़िक्र थी तो यह कि अपनी जायदाद का हिस्सा अदा कर दूं। ज़्यादा-तर हिस्सा जायदाद अदा कर दिया था, कुछ रह भी गया। अल्लाह तआला बच्चों को तौफ़ीक़ दे कि बाक़ी भी अदा कर दें।

उनकी बहन ताहिरा कहती हैं यह भी दूसरी वालिदा से हैं कि मेरे भाई ने हमेशा मेरे साथ एक शफ़ीक़ बाप की तरह सुलूक किया। सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि उन्होंने कभी सगे और सौतेले की तफ़रीक़ नहीं की। सब बहन भाईयों से एक प्रकार का सुलूक किया और दोनों माताओं के साथ बराबरी का सुलूक किया। हमें कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि हमारी माएं अलग अलग हैं। फिर यह कहती हैं कि वह वास्तव में मेरे बाप ही की जगह थे। जिस तरह ख़ामोशी से एक बाप अपनी बेटी के दुख और सुख में काम आता है बिल्कुल ऐसा ही उनका मेरे साथ ताल्लुक़ था। फिर उनकी बेटी नमूद सहर कहती हैं कि कुछ चीज़ें अब्बा की ज़िंदगी में बहुत नुमायां हैं और बार-बार याद आती हैं। उनमें सबसे ज़्यादा उनकी मेहमान-नवाज़ी और लोगों से मुहब्बत का ताल्लुक़ है। फिर कहती हैं: मेहमान-नवाज़ी का यह हाल था कि घर में खाना पक्का होता मेहमान आ जाते। खाने के लिए घर वाले बैठे हैं लेकिन वही खाना बाहर मेहमानों को चला गया और घर वालों ने फिर अंडे तल कर गुज़ारा कर लिया। फिर कहती हैं कि बहुत सी गलतियां ज़िंदगियों में होती हैं। इन्सान से ऊंच नीच भी हो जाती है और इस की वजह से कुछ इबतिला में से भी उनको गुज़रना पड़ा लेकिन कभी ख़िलाफ़त के बारे में उन्होंने कोई ऐसी बात नहीं की कि जिससे हमें कभी ख़्याल हो कि ख़लीफ़ा वक़्त का कोई ग़लत फ़ैसला हुआ है। हमेशा हमारे घर में ख़ुतबा सुनना और जमाअत से ताल्लुक़ रखना यह विशेष व्यवस्था से होता था। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को सब्र और हौसला दे और नेकियों में बढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

अगला वर्णन रहमतुल्लाह साहिब का है। यह इंडोनेशिया के हैं। छयासठ (66) वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। दक्षिण जावा में उनकी पैदाइश हुई। 1980 ई. में जमाअत इंडोनेशिया के पूर्व रईस अल् तबलीग़ माननीय सियूती अज़ीज़ अहमद साहिब के माध्यम से बैअत करके जमाअत में दाख़िल हुए 1993 ई. में निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल हुए। वहां का रंग टेंगा (karang tengah) की जमाअत है, अपनी वफ़ात तक वहां उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिलती रही। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त तीन बच्चे और छः नवासे शामिल हैं।

उनकी पत्नी ने लिखा कि मरहूम ने एक स्वप्न देखा था जिसमें उन्होंने अपने आपको लोगों के हुजूम के मध्य क़तारों में खड़े देखा। उन्होंने ख़ाब में किसी से पूछा कि कौन सी क़तार में शामिल हो जाऊं। किसी ने एक क़तार की तरफ़ इशारा किया जिसमें एक मुक़द्दस हस्ती थी। मरहूम ने उस मुक़द्दस आदमी को नहीं पहचाना। कुछ ही अरसा के बाद मालूम हुआ कि उन्होंने ख़ाब में जिस मुक़द्दस हस्ती को देखा था वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे। इसी वजह से मरहूम जमाअत की सच्चाई के क़ायल हो गए और फिर बैअत भी कर ली। आपकी बेटी ने लिखा कि मरहूम बैअत के बाद मुक़ामी जमाअत के अतिरिक्त लोकल मज्लिस अन्सारुल्लाह मैं ख़िदमत बजा लाते रहे। जमाअत को मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से हमले और धमकियां मिलती थीं तो मरहूम बड़ी बहादुरी से जमाअत की तरफ़ से बचाव करते थे। बड़े राहम दिल थे। जब कोई मदद मांगने या क़र्ज़ लेने आता तो हमेशा उसकी मदद करते। उनकी तीसरी बेटी ने लिखा कि ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत रखने वाले थे और बड़े आज्ञाकारी थे।

अब्दुल बासित साहिब अमीर इंडोनेशिया लिखते हैं कि ख़िलाफ़त और जमाअत से बेपनाह मुहब्बत रखने वाले थे। कहते हैं वहां मग़रिबी जावा के एक शहर में एक जमाअत है वहां कई बार मुख़ालिफ़ीन-ए-जमाअत ने हमारी मस्जिद पर हमला किया और मुक़ामी हुकूमत को जमाअत की सरगर्मीयों पर पाबंदी लगाने के लिए कहा तो इस अवसर पर रहमतुल्लाह साहिब ने बड़ी बहादुरी से मुख़ालिफ़ीन और मुक़ामी हुकूमत का सामना किया और उनके एतराज़ात के जवाब देते और मरहूम की कोशिशों की वजह से वहां अब तक जमाअत क़ायम है और कोई पाबंदी नहीं लगाई गई। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को भी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला वर्णन अल्-हाज अब्दुल हमीद टॉक साहिब यारी पूरा कश्मीर का है। 24 दिसंबर को 94 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। मुहम्मद अकरम टॉक साहिब यारी पूरा के बेटे थे जो इस इलाक़े के आरंभिक अहमदियों में से थे। मरहूम बहुत नेक, नरम मिज़ाज, मिलनसार, हर दिलअज़ीज़, संजीदा मिज़ाज, ख़ामोश स्वभाव वाले बुज़ुर्ग थे। लंबा अरसा जमाअती ख़िदमात की तौफ़ीक़ पाई। सुबाई अमीर जम्मू-ओ-कश्मीर के अतिरिक्त ज़िलई अमीर और नाज़िम अन्सारुल्लाह के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। स्थानीय जमाअत में स्थानीय ओहदों पर ख़िदमत बजा लाते रहे। कई वर्षों तक अंजुमन तहरीक जदीद भारत के एज़ाज़ी मैंबर और सदस्य रहे। उनके वक़्त में सुबाई इमारत के दौरान 1987 ई. में वादई कश्मीर में पाँच जमाअती स्कूलों का क़ियाम भी अमल में आया। कई मसाजिद और मिशन हाऊसज़ की तामीर के लिए आपने बहुत मेहनत की। नौजवानों की इलमी सलाहियतों को उजागर करने और बढ़ाने के लिए काफ़ी कोशिशें करते और इस काम में हमेशा पेश पेश रहते थे। यारी पूरा के इलाक़े में उनकी समाजी ख़िदमात की वजह से लोगों में आप की बड़ी इज़्ज़त थी। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी अगली नसलों को भी नेक और सालिह बनाए, ख़िदमत की तौफ़ीक़ देता रहे।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 07 जनवरी 2022 पृष्ठ 5-10)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 12 का शेष

mountain) ऐबटस फ़ोर्ड (abbotsford)

और दफ़्तर अतफ़ाल की नुमायां इमारतें वान (vaughan) नंबर एक। फिर पीस विलेज (peace village) फिर कैलगरी (calgary) टोरंटो वैस्ट (toronto - west) ब्रैम्पटन वैस्ट (brampton-west) हैं।

दफ़्तर अतफ़ाल की पाँच प्रथम जमाअतें हदीक़ा अहमद नंबर एक। ब्रैडफोर्ड (bradford) डरहम (durham) लंदन (london) मिल्टन वैस्ट (milton - west)

अमरीका की वसूली के लिहाज़ से जो दस जमाअतें हैं मेरी लैंड (maryland) लास ऐंजलिस (los angeles) डेट्रॉइट (detroit) सिलीकोन वैली (silicon valley) बोस्टन (boston) ऑस्टन (aston) फ़ैंकस (phoenix) सेरा कोस (syracose) लास वेगस (las vegas) और फच बर्ग (fitchburg)

दफ़्तर अतफ़ाल के लिहाज़ से पहली दस जमाअतें मेरी लैंड (maryland) लास ऐंजलिस (los angeles) सेइटल (seattle)ओरलैंडो (orlando) ऑस्टन (aston) सिलीकोन वैली (silicon valley) फ़ोनिक्स (phoenix) फच बर्ग (fitchburg)लास वेगास (las vegas) ज़ाइन (zion) हैं।

पाकिस्तान में चंदा बालिग़ान की पहली तीन जमाअतें हैं प्रथम लाहौर। फिर रब्वाह। फिर कराची। और अज़ला की पोज़ीशन यह है। इस्लामाबाद नंबर एक पर। फिर फैसलाबाद, गुजरात, गुजरांवाला, सरगोधा, मुल्तान, उम्रकोट, हैदराबाद, मीरपुर ख़ास, डेरा ग़ाज़ी ख़ान।

मजमूई वसूली के लिहाज़ से पहली दस हैं : इस्लामाबाद शहर, डीफ़ैंस लाहौर, टाउन शिप लाहौर, क्लिफ्टन कराची, दारुल ज़िकर लाहौर, मॉडल टाउन लाहौर, गुलशन आबाद कराची, सुमन आबाद लाहौर, अज़ीज़ आबाद कराची, अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर।

दफ़्तर अतफ़ाल की तीन बड़ी ह हैं : प्रथम लाहौर। द्वितीय कराची। त्रितीय रब्वाह। दफ़्तर अतफ़ाल में ज़िलों की पोज़ीशन यह है। इस्लामाबाद नंबर एक। स्यालकोट। फिर रावलपिंडी। सरगोधा। फैसलाबाद। गुजरात। हैदराबाद। मीरपुर ख़ास। उम्रकोट। नारोवाल।

ग़ैरमामूली मसाई करने वाली जमाअतें हैं : ड्रिग रोड कराची। नूर पूरा लाहौर। गुजरांवाला शहर। बेयतुल फ़ज़ल फैसलाबाद। पिशावर शहर। दिल्ली गेट लाहौर। कोटली आज़ाद कश्मीर। ननकाना साहिब।

भारत के पहले दस सूबे जो हैं। केराला। जम्मू कश्मीर। तामिल नाडू। तिलंगाना। कर्नाटक। ओडिशा। पंजाब। वैस्ट बंगाल। दिल्ली। महाराष्ट्रा।

दस जमाअतें वसूली के लिहाज़ से हैदराबाद नंबर एक। फिर क़ादियान। फिर करोलाई। फिर पित्तापीरम। कोइम्बटोर। बैंगलौर। कलकत्ता। कालीकट। रेशी नगर। मेला पालम।

आस्ट्रेलिया की जो दस हैं: मिलबर्न लॉंग वार्न (melbourne langwarrin) केसल हिल (castle hill) मारसिडन पार्क (marsden park) एडीलेड साउथ (adelaide south) मैलबोर्न बैरविक (melbourne berwick) प्रथ (perth) पैनर्थ (penrith) एडीलेड वैस्ट (adelaide west) और लोगन ईस्ट (logan east)

बालिग़ान में आस्ट्रेलिया की जमाअतें मलबर्न लॉंग वार्न (melbourne langwarrin) कासटल हिल (castle hill) मारसिडन पार्क (marsden park) एडीलेड साउथ (adelaide south) मलबर्न बैरक (melbourne berwick) प्रथ (perth) पैनर्थ (penrith) एडीलेड वैस्ट (adelaide west) ब्लैक टाउन (blacktown) और कैनबरा (canberra)

दफ़्तर अतफ़ाल में आस्ट्रेलिया की जमाअतें हैं मलबर्न लॉंग वार्न (melbourne langwarrin) एडीलेड साउथ (adelaide south) मलबर्न बैरविक (melbourne berwick) लोगन ईस्ट (logan east) प्रथ (perth) केसल हल (castle hill)मलबर्न ईस्ट (melbourne east) माउंट डरोइट (mount druitt) पैनर्थ (penrith) बरसबन सेंट्रल (brisbane central)

ये इनके स्थान हैं। अल्लाह तआला समस्त क़ुर्बानी करने वालों के अम्वाल-ओ-नफ़ूस में बे-इंतिहा बरकत अता फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला की हमारे हर कर्म पर नज़र है अतः इस उद्देश्य को हमें हमेशा सामने रखना चाहिए कि

जो काम भी हमने करना है इस की प्रसन्नता की ख़ातिर करना है, यदि यह सोच बन जाए तो फिर ही इन्सान अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वास्तविक वारिस ठहरता है

तहरीक वक़्फ़-ए-जदीद के चौंसठ वें वर्ष के दौरान जमाअत अहमदिया की तरफ़ से एक करोड़ बारह लाख सतहत्तर हज़ार पाऊंड की बेमिसाल क़ुर्बानी

अल्लाह तआला हमारे दिलों का हाल जानता है हमारी नियतों को जानता है इसलिए वह यह नहीं देखताकि

किसी ने बड़ी क़ुर्बानी की है या छोटी बड़ी रक़म दी है या थोड़ी बल्कि अल्लाह तआला तो नियतों के अनुसार अज्र देता है

कौन है जो आज इस जमाअत के बारे में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से ख़ुदाई वादों के अनुसार क़ायम हुई है यह कह सके कि यह कमज़ोर हो रही है

यह जमाअत तो क़ायम ही फलने फूलने और बढ़ने के लिए हुई है और दुश्मनों का कोई वार भी इस का बाल बांका नहीं कर सकता और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह फल फूल रही है

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल के बहुत से वाक़ियात हैं अल्लाह तआला सच्चे वादों वाला है वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए अपने वादों को पूरा फ़र्मा रहा है और

परोक्ष से सहायता भी फ़रमाता है और फ़रमाएगा इं शा अल्लाह, हमें तो वह अवसर देता है कि उसकी रज़ा हासिल करने के लिए उसकी राह में ख़र्च करें ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनें

वक़्फ़-ए-जदीद के पैंसठ वें वर्ष के आग़ाज़ का ऐलान, चंदे के मसारिफ़ और दुनिया भर में बसने वाले अहमदियों की क़ुर्बानी के वाक़ियात का उमूमी वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 7 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○ (अल् बकरा : 266)

इस आयत का अनुवाद यह है और उन लोगों की मिसाल जो अपने अम्वाल अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए और अपने जानो में से कुछ को सबात देने के लिए ख़र्च करते हैं ऐसे बाग़ की सी है जो ऊंची जगह पर वाक़्य हो और उसे तेज़ बारिश पहुंचे तो वह बढ़ चढ़ कर अपना फल लाए और यदि उसे तेज़ बारिश न पहुंचे तो शबनम ही बहुत हो। और अल्लाह इस पर जो तुम करते हो गहिरी नज़र रखने वाला है।

इस आयत में अल्लाह तआला मोमिनों की अल्लाह तआला की राह में, अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की इच्छा में ख़र्च करने की हालत का नक़्शा खींच रहा है कि ये वे लोग हैं जो अल्लाह तआला की राह में इसलिए ख़र्च करते हैं कि एक तो अल्लाह तआला के हुक्म से उसकी राह में ख़र्च करके अल्लाह तआला की रज़ा और ख़ुशनुदी हासिल करने वाले बनें। दूसरे अपनी क़ौम और अपने मिशन को मज़बूत करें। इस ज़माने में इस्लाम की तालीम और तब्लीग़ को फैलाने का काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सपुर्द हुआ है और आप के मानने वालों का भी यह कर्तव्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने के लिए जान, माल और वक़्त क़ुर्बान करें। हर ज़माने में और हर क़ौम में आने वाले अम्बिया अपने मानने वालों को माली क़ुर्बानी की तलक़ीन करते रहे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी यह फ़रमाया है कि तुम्हें दीन की ख़िदमत के लिए दीन की राह में अपने माल का कुछ हिस्सा देना चाहिए तभी वास्तविक ईमान का पता चलता है और मोमिन यक़ीनन दीन की ख़ातिर माली क़ुर्बानियां करते हैं और उन क़ुर्बानियों का उद्देश्य किसी पर एहसान नहीं होता बल्कि इच्छा होती है तो यह कि हमारा ख़ुदा किसी तरह हमसे राज़ी हो जाए। हमारे नफ़्स को मज़बूती अता हो। हम अपने ईमान और ईक़ान में मज़बूत हों। हमारी क़ौम तरक़्क़ी करने वाली हो। हम जिस हद तक संभव है अपने माल से भी कमज़ोरों को मज़बूत करें। जिस उद्देश्य के लिए हमने इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ की बैअत की है उसे हम हासिल करने वाले बनें।

अतः ऐसे लोग नफ़्सानी सोचों से पवित्र हो कर सोचते हैं। उनका नफ़्स उन्हें क़ुर्बानियां करके अल्लाह तआला की मर्ज़ी हासिल करने की तरफ़ तवज्जा दिलाता है और फिर वे क़ुर्बानियों के आला मयार हासिल करते हैं या करने की कोशिश करते हैं और फिर अल्लाह तआला भी ऐसे लोगों की क़ुर्बानियां क़बूल फ़रमाता है। उन्हें अपने फ़ज़्लों से नवाज़ता है।

अल्लाह तआला हमारे दिलों का हाल जानता है, हमारी नियतों को जानता है, इसलिए वह यह नहीं देखता कि किस ने बड़ी क़ुर्बानी की है या छोटी। बड़ी रक़म दी है या थोड़ी बल्कि अल्लाह तआला तो नियतों के अनुसार अज्र देता है इसलिए इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह तआला की ख़ातिर ख़र्च करने वालों की मिसाल दो तरह की है। एक वाबिल की अर्थात मोटे क़तरों वाली तेज़ बारिश की और दूसरे तल की अर्थात कमज़ोर हल्की बारिश बिल्कुल फुवार जैसे पड़ती है या शबनम की। ज़्यादा वृद्धि रखने वाला तो दीन की ख़ातिर बहुत ख़र्च करता है या कर सकता है लेकिन ग़रीब आदमी यह हसरत रख सकता है उसे ख़्याल आ सकता है कि यह तो ख़र्च करके माली क़ुर्बानी में बढ़ रहा है, अमीर आदमी बड़ी बड़ी रकमें देकर अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाला बन रहा है और उसका क़ुरब हासिल करने वाला बन गया है या बनने की कोशिश कर रहा है या बन जाएगा। मेरे पास तो मामूली रक़म है मैं किस तरह उसके बराबर पहुंच सकता हूँ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है जिस तरह उपजाऊ ज़मीन को थोड़ी बारिश या शबनम से भी फ़ायदा पहुंच सकता है इसी तरह वृद्धि न रखने वाले की थोड़ी क़ुर्बानी तल का दर्जा रखती है और वह भी जो थोड़ी क़ुर्बानी है फल फूल लाने में कम किरदार अदा नहीं करेगी। क़ुर्बानियों का फल तो अल्लाह तआला ने देना है, हर अमल को फल तो अल्लाह तआला ने लगाना है तो फिर अल्लाह तआला तुम्हारे हालात और तुम्हारी नीयतें जानता है इसलिए वह तुम्हारी थोड़ी क़ुर्बानियों को भी दो चंद बल्कि इस से भी ज़्यादा बढ़कर फल लगाएगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि आज एक दिरहम एक लाख दिरहम पर सबक़त ले गया। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! यह किस तरह हुआ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक व्यक्ति के पास दो दिरहम थे उसने इस में से एक दिरहम की क़ुर्बानी कर दी और एक व्यक्ति के पास बेशुमार दौलत और जायदाद थी उसने इस में से एक लाख दिरहम की क़ुर्बानी दी।

(सुनन निसाई, किताब अल् ज़कात, बाब जहदुल मक़ल हदीस 2528)

इस की एक लाख दिरहम की क़ुर्बानी उसकी दौलत के मुक़ाबले में बहुत कम थी। अतः अल्लाह तआला तो नियतों को फल लगाता है और उस अमल को फल लगाता है जो इन हालात में किए जाते हैं। ग़रीब की भी तसल्ली फ़र्मा दी कि यह न समझो कि तुम्हारी थोड़ी क़ुर्बानियों की कोई हैसियत नहीं बल्कि यह थोड़ी क़ुर्बानियां भी जहां तुम्हारे ईमानों को मज़बूत करने वाली हैं वहां जमाअत की मज़बूती के भी सामान करती हैं। अतः अल्लाह तआला की ख़ातिर एक जज़बे से दी हुई क़ुर्बानियां ही अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को खींचती हैं।

अल्लाह तआला की हमारे हर अमल पर नज़र है अतः इस उद्देश्य को हमें हमेशा

सामने रखना चाहिए कि जो काम भी हमने करना है इस की रज़ा की ख़ातिर करना है। यदि यह सोच बन जाए तो फिर ही इन्सान अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वास्तविक वारिस ठहरता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में तो अधिकतर आप अलैहिस्सलाम मानने वाले ग़रीब लोग थे लेकिन क़ुर्बानियों में इस क़दर बढ़े हुए थे कि एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी तारीफ़ में फ़रमाया कि'' मैं देखता हूँ कि सदहा लोग ऐसे भी हमारी जमाअत में दाख़िल हैं जिनके बदन पर मुश्किल से लिबास भी होता है। मुश्किल से चादर या पाजामा भी उनको मयस्सर आता है। उनकी कोई जायदाद नहीं। परन्तु उनकी असीमित श्रद्धा और प्रेम से, मुहब्बत और वफ़ा से तबियत में एक हैरानी और आश्चर्य पैदा होता है जो उनसे समय समय पर सादर होती रहती है या जिसके आसार उनके चेहरों से प्रकट होते हैं वे अपने ईमान के ऐसे पक्के और यक़ीन के ऐसे सच्चे और सिदक़-ओ-सबात के ऐसे मुख़लिस और बावफ़ा होते हैं कि यदि उन माल-ओ-दौलत के बंदों, इन दुनयावी लज़्ज़ात के दिलदादों को इस लज़्ज़त का इलम हो जाए तो उसके बदले में ये सब कुछ देने को तैयार हो जावें।"

(मल्फ़ूज़ात, बहग 10 पृष्ठ 306-307)

फिर एक जगह आप अलैहिस्सलाम हैं "हम देखते हैं कि इस जमाअत ने इख़लास और मुहब्बत में बड़ी नुमायां तरक़्क़ी की है। बाज़-औक़ात जमाअत का इख़लास, मुहब्बत और जोश-ए-ईमान देखकर ख़ुद हमें आश्चर्य और हैरत होती है और यहां तक कि दुश्मन भी आश्चर्य में हैं।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 334)

अत: वफ़ा और इख़लास में तरक़्क़ी और जोश ईमान का ग़ैरमामूली मयार ऐसा है जिसके अमली इज़हार आज भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के अफ़राद में हमें नज़र आते हैं बल्कि इख़लास-ओ-वफ़ा में तरक़्क़ी नए अहमदियों में भी इस हद तक है, अभी उनकी तर्बीयत को थोड़ा अरसा ही हुआ है कि हैरत होती है कि इस थोड़े समय में उन्होंने इस क़दर तरक़्क़ी कर ली है लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ से मुहब्बत का ताल्लुक़ और ख़िलाफ़त से वफ़ा और इख़लास का मयार ऐसा है कि जैसा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि दुश्मन भी आश्चर्य में है कि यह क्या चीज़ है जिसने उनमें यह तबदीली पैदा की है। यह उन पर यक़ीनन अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है जो अल्लाह तआला ने उनकी नेक तबियत और सआदत मंदी को देखकर उन पर फ़रमाया है।

इस नेक तबियत और नेक फ़ित्रत और बैअत का हक़ अदा करने का इज़हार और ख़लीफ़ा वक़्त से वफ़ा के ताल्लुक़ के इज़हार उन लोगों के कथनी और करनी से ज़ाहिर हो रहे होते हैं।

आज दुनिया जब भोतिकवाद में डूबी हुई है ये लोग माली क़ुर्बानियां करके एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं ताकि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल की जाए क्योंकि उन्हें यह समझ हासिल हो गया है कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने का एक माध्यम से अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करना भी है। अत: कौन है जो आज इस जमाअत के बारे में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से ख़ुदाई वादों के अनुसार क़ायम हुई है यह कह सके कि यह कमज़ोर हो रही है।

यह जमाअत तो क़ायम ही फलने फूलने और बढ़ने के लिए हुई है और दुश्मनों का कोई वार भी इस का बाल बांका नहीं कर सकता और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह फल फूल रही है।

माली क़ुर्बानी का वर्णन हो रहा है तो इस हवाले से मैं चंद वाक़ियात भी पेश करता हूँ कि किस तरह लोग क़ुर्बानी करके अपने ईमान और यक़ीन का इज़हार करते हैं और फिर अल्लाह तआला भी उनके ईमानों को किस तरह मज़बूती प्रदान की है।

सीरालियून अफ़्रीक़ा का एक क्षेत्र उसके भी एक दूर दराज़ इलाक़े में एक व्यक्ति है इस के बारे में वहां के लोकल मिशनरी वर्णन करते हैं कि वह दौरे पर गए तो महीने का अंत था। वहां एक जमाअत के अहबाब को वक़्फ़-ए-जदीद की तरफ़ तवज्जा दिलाई। लोग मस्जिद में मौजूद थे उन्हें इस तरफ़ तवज्जा दिलाई तो वहां के इमाम शेख़ उस्मान ने जो रक़म चंदा के लिए जमा की हुई थी वह दी और यह कहा कि हम अपना वादा पूरा नहीं कर सके और हमारी दिली-ख़्वाहिश है कि हम अपना टार्गेट और वादा पूरा करें। इस वक़्त तो कोई माध्यम और वसीला नहीं है। बहरहाल मुअल्लिम को उन्होंने कहा कि दुआ करा दें। लोकल मिशनरी वर्णन करते हैं मैं ने दुआ कराई और सबने ऊंची आवाज़ में आमीन कहा। फिर मैं वापिस मोटर साईकल पर बैठ के अपने मिशन हाऊस आ गया। कहते हैं अभी मैं मिशन हाऊस नहीं पहुंचा था कि उसी इमाम का मुझे फ़ोन आया कि मैं आपसे मिलने मिशन हाऊस आ रहा हूँ। मैं बहुत हैरान हुआ कि अभी तो मैं वहां से आ रहा हूँ अभी फ़ोन भी आ गया है। जब वह लोकल इमाम मेरे पास पहुंचा तो कहते हैं कि हमने जो दुआ की थी उसका यह असर हुआ कि थोड़ी देर के बाद ही एक मेरा रिश्तेदार आया और जेब में हाथ डाल के उसने एक लाख लीयौन मेरे हाथ पर रख दिए और किसी मुआमले में मुझे भी दुआ के लिए कहा। कहते हैं यह देख के मैंने वहीं अल्लाहु-अकबर के ऊंचे नारे लगाने शुरू कर दिए। वह बंदा बड़ा हैरान हुआ कि यह तुझे क्या हो गया है? तो मैंने उसे बताया कि हमारे वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे का एक वादा था उस में कुछ रक़म रह गई थी। अभी हम दुआ करके फ़ारिग़ ही हुए हैं कि अल्लाह तआला ने तुम्हें भेज दिया और यह रक़म मुझे भेज दी और उस इमाम शेख़ उस्मान ने वह सारी रक़म जो एक लाख लीयौन की थी वह तुरन्त तौर पर आ कर वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे में जमा करवा दी। वह रक़म उनके लिहाज़ से बहुत बड़ी थी जबकि कि हमारे लिहाज़ से उनकी रक़म बहुत थोड़ी बनती है। यदि उस को convert करें तो केवल साढ़े छ: पाऊंड बनते हैं लेकिन उनकी यह बहुत बड़ी क़ुर्बानी थी जो अल्लाह तआला के फ़ज़लों को जज़ब करने वाली है। यह उनका इख़लास है कि ज़रूरत अपनी भी है लेकिन जो भी रक़म आई अपने पास नहीं रखी वह तुरन्त तौर पर आ कर जमा करवा दी और यही वह मिसालें हैं जहां एक दिरहम एक लाख दिरहम पर सबक़त ले जाता है।

यक़ीनन अल्लाह तआला ने उन पर अपने प्यार की नज़र डाली होगी। फिर देखें कि क़ुर्बानी के यह मयार एक जगह नहीं, मर्दों में नहीं औरतों में भी दिखाई देते हैं।

चाड एक देश है। यहां भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़े बड़े मुख़लिस जमाअत में पैदा हो रहे हैं। जमाअत चाड की अक्सरियत नए अहमदियों की है। वहां के मुबल्लिग़ कहते हैं कि एक मैंबर महिला उम्म-ए-हानि हैं। उन्होंने वक़्फ़ जदीद में सत्तर हज़ार फ्रॉक का वादा किया। इंतिज़ाम नहीं हो सका। उनके पास एक ऊंट था। इस ऊंट को एक लाख सत्तर हज़ार में बैच कर दिया और वक़्फ़-ए-जदीद का वादा भी अदा किया और बाक़ी बची हुई रक़म अपने पास नहीं रखी वह भी मुख़्तलिफ़ चंदों में दे दी।

फिर टोगो एक और मुल्क है वहां एक अहमदी इब्राहीम हैं। लोगों के जानवरों को चराते हैं। बक़रियां इत्यादि चराते हैं और जो भी अहमदियत अपने हिसाब से बड़ी बढ़ चढ़ कर क़ुर्बानी देते हैं। वहां उन्होंने वादा किया और फिर वादा पूरा नहीं कर सके। क़रीब ही दरिया है, दरिया से रेत ले जाई जाती है और उन्होंने फिर यह किया कि रात को मज़दूरी करके रेत के दो ट्रक भरे और उस से जो आमद हुई वह वक़्फ़-ए-जदीद में, चंदा में देदी। क्यों इतनी मेहनत की और फिर यह है कि इतनी मेहनत के बाद कोई रक़म भी केवल इसलिए अपने लिए नहीं रखी कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने का अब उनको समझ हासिल हो गई है।

फिर मर्द औरत या बड़ी उम्र के लोगों का सवाल नहीं, नौजवानी में क़दम रखने वाले बच्चों का भी यही हाल है।

बेलीज़ सेंट्रल अमरीका का एक देश है। हज़ारों मील की यहां से दूरी है। वहां कभी ख़लीफ़-ए-वक़्त नहीं गए। सारे नए अहमदी हैं लेकिन सोच एक है।

अफ़्रीक़ा की सोच हो या अमरीका की या जज़ायर की या एशिया की यह एक सोच है और यह वह इन्क़िलाब है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पैदा किया है। वाक़िया यूं है कि एक बच्चा चौदह वर्ष की आयु का है उसने तहरीक जदीद का चंदा अदा किया। इस का वर्णन मैं ने यहां कर दिया। इस पर लोगों ने इस को बड़ी मुबारक बादें दीं और कैनेडा से किसी ने इस को दो सौ डालर तोहफ़ा भी भेजा कि यह तुमने क़ुर्बानी की है तो मेरी तरफ़ से इनाम। अब इस बच्चे का हाल देखें चौदह वर्ष में क़दम रखने वाला नौजवान बचा है, यहां हो तो तुरंत गेमें ख़रीदने का शौक़ पैदा होता है। उसने कहा कि मैं ने अपना सोशल सैक्योरिटी कार्ड बनवाना था उसके लिए मुझे तीस डालर की ज़रूरत थी इसलिए तीस डालर तो मैं ने रख लिए बाक़ी एक सौ सत्तर डालर जो हैं मैं फिर चंदा में दे देता हूँ। ग़रीब घराने का लड़का है। इस को कहा भी कि यह तुम अपने लिए रखों, अपने ख़र्च के लिए रखों। इसरार भी किया लेकिन उसने बड़े इसरार से वे सब रक़म चंदा में दी। इस बच्चे का नाम दानियाल है। यह है दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करना। अल्लाह तआला करे कि यह सोच इस बच्चे में हमेशा क़ायम रहे और इस दुनिया-दारी के माहौल से अल्लाह तआला इस बच्चे को बचा के रखे।

फिर जमैका एक और मुल्क है। और यह जो एक ख़ादिम का वर्णन कर रहा हूँ उनका नाम यासीन साहिब है। अर्से से बेरोज़गार थे। गलीयों में कोई छोटी मोटी चीज़ें बैच के, टॉफ़ीयां चॉकलेट इत्यादि बैच के गुज़ारा करते थे लेकिन इस हालत में भी उनको फ़िक्र लगी होती थी कि मैं ने माली क़ुर्बानी करनी है। वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे का मैं ने वादा किया है और वर्ष ख़त्म हो रहा है और मेरे पास कुछ भी नहीं। अंत एक दिन वह शाम को दिसंबर के बिल्कुल अंत में मिशनरी के पास आए और कहा कि आज चार-सौ जमैकन डालर मुझे आमदनी हुई है। इस में से पच्चीस फ़ीसद निकाल के अब मैं सौ डालर आपको वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा दे रहा हूँ।

फिर एक ग़रीब मुल्क के अहमदी के इख़लास-ओ-वफ़ा और अल्लाह तआला की

रज़ा और उस की मुहब्बत जज़ब करने की ग़ैरमामूली मिसाल देखें। लोग कहते हैं ये उन पढ़ लोग हैं, ग़रीब हैं लेकिन ये लोग पढ़े लिखे लोगों से ज़्यादा दीन की समझ रखने वाले हैं और दिल के अमीर हैं।

गिनी कनाकरे मुल्क है। मुबल्लिग़ इंचार्ज कहते हैं कि वक़्फ़-ए-जदीद के माली वर्ष के आख़िरी दस दिनों में वक़्फ़-ए-जदीद की एहमीयत और उसकी बरकात पर ख़ुतबा दिया और मैं ने जो मुख़्तलिफ़ ख़ुतबात दिए हुए थे उनके इक़तिबासात भी पेश किए, जमाअत को माली क़ुर्बानी की तलक़ीन की, तवज्जा दिलाई। कहते हैं ख़ुतबा के अंत पर एक ग़रीब परन्तु निहायत मुख़लिस अहमदी मूसा साहिब ने अपनी जेब में मौजूद रक़म तक़रीबन दो लाख अठारह हज़ार पाँच सौ फ्रॉंक गिनी निकाल कर वक़्फ़-ए-जदीद में अदा कर दी। जब मैं ने उन से इस्तिफ़सार किया कि बड़ी रक़म आपने दी है, पिछले वर्ष भी बड़ी रक़म दी थी उसकी क्या वजह है? तो कहने लगे कि मेरे दिल में ख़लीफ़तुल मसीह की यह बात कील की तरह गढ़ गई है कि एक दिल में दो मुहब्बतें नहीं रह सकतीं। या तो बंदा ख़ुदा से मुहब्बत करे या फिर माल से यही वजह है कि मुझे जब अवसर मिलता है मैं कोशिश करता हूँ कि अपने अमल से भी इस का इज़हार हो जाए। कहने लगे कि मेरा ईमान हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा तो नहीं हो सकता कि घर का सार अमाल अल्लाह तआला की राह में ख़र्च कर सकूं लेकिन यह तो कर सकता हूँ कि जेब में मौजूद सारा माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर दूं और दुआ की दरख़ास्त भी करता हूँ कि अल्लाह तआला मुझे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा ईमान भी अता कर दे और कहने लगे कि दूसरी बड़ी वजह यह है कि जब से मैं ने माली क़ुर्बानी में हिस्सा लेना शुरू किया है अल्लाह तआला ने मुझे ईमान की दौलत से माला-माल कर दिया है। मेरे ईमान में भी इज़ाफ़ा होने लग गया है और मैं अपने आप में एक ग़ैरमामूली तबदीली पाता हूँ। यह है वह सोच और इदराक जो बहुत से पढ़े लिखों में नहीं होगा।

फिर अल्लाह तआला ईमान में बढ़ने के भी किस तरह सामान फ़रमाता है। इस बारे में एक और वाक़िया है।

गिनी कनाकरी एक देश है वहां के एक मुख़लिस साहब-ए-हैसियत अहमदी हसन साहिब बिज़नस करते हैं। वह कहते हैं कि मैं ने चंदे की रक़म एक लिफ़ाफ़े में डाल कर अपने टेबल पर रखी और मसरुफ़ियात की वजह से मिशन में न भिजवा सका। अचानक याद आने पर कहते हैं मैं ने वह रक़म अपने ड्राईवर को दी और उस को मिशन हाऊस भिजवाया कि जाकर चंदा अदा कर आओ और मैं किसी काम के सिलसिला में बाहर चला गया। इसी अस्ना में जब बाहर थे तो उनके हम-साए के दफ़्तर में आग लग गई और जल कर राख हो गया। कहते हैं मुझे फ़ोन आने शुरू हो गए कि तुम्हारे दफ़्तर में आग लग गई है तो जल्दी से मैं वहां पहुंचा। फिर कहते हैं मेरे दिल में यह ख़्याल आया यह किस तरह संभव हो सकता है, मैं तो अल्लाह तआला की ख़ातिर क़ुर्बानी करने वाला भी हूँ। कहते हैं लेकिन अल्लाह के निशान देखें अल्लाह तआला ने किस तरह मान रखा कि बावजूद इस दूसरे दफ़्तर की दीवार मुल्हिक़ होने के मेरा दफ़्तर बिल्कुल महफ़ूज़ रहा और इस दफ़्तर में इस वक़्त कंपनी की कसीर रक़म भी मौजूद थी। दो दफ़ातिर बल्कि उनसे मुल्हिक़ा जल गए लेकिन उनका दफ़्तर महफ़ूज़ रहा तो कहते हैं कि मुझे तुरंत यह ख़्याल आया कि यह यक़ीनन चंदे की बरकत है। इन लोगों में इलम भी है। यह नहीं कि इलम नहीं है। कहते हैं और साथ ही मेरा ख़्याल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इलहाम की तरफ़ भी गया कि यह आग तेरी ग़ुलाम बल्कि तेरे ग़ुलामों की भी ग़ुलाम है। बहरहाल कहते हैं कि इस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक अदना ग़ुलाम को नुक़्सान से महफ़ूज़ रखा।

फिर एक वाक़िया, अमीर साहिब गेम्बया कहते हैं एक रीजन की हमारी एक जमाअत के मुअल्लिम हैं उन्होंने वर्णन किया कि हमारी जमाअत से एक सम्बोबा (sambou bah) साहिब ने जब पिछले वर्ष वक़्फ़-ए-जदीद के बारे में मेरा ख़ुतबा सुना और नए वर्ष का जब ऐलान हुआ और जब मैं ने वाक़ियात वर्णन किए तो उन्होंने पाँच सौ डलासी (dalasi) अदा कर दिया और कहते हैं कि अल्लाह तआला ने उन पर ऐसा फ़ज़ल किया कि इस वर्ष उनकी फ़सल दोगुनी हुई तो उन्होंने वादा पाँच सौ डलासी का किया था, लेकिन अदायगी फिर उन्होंने एक हज़ार डलासी कर दी। फिर कहते हैं उनकी ज़मींदार से जो आमद थी इस पर उन्होंने बाजरे के दस बंडल ज़कात दी थी। इस वर्ष उनकी आमद इतनी थी कि उन्होंने पच्चास बंडल दिए। इसी तरह मूंगफली पर भी शायद दो बोरे ज़कात अदा की और कहते हैं कि वे अहमदी अहबाब जो चंदे में बाक़ायदा हैं उनकी फ़सल पहले से बेहतर हुई और ग़ैर अहमदी अहबाब भी यह कह रहे हैं कि जमाअत अहमदिया में कोई तो बात है कि जब भी उनके अफ़राद अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करते हैं उनकी फसलों की पैदावार बढ़ जाती है।

फिर केवल अफ़्रीक़ा के या कुछ ग़रीब मुल्कों के अहमदी और नए अहमदियों ही नहीं बल्कि अमीर देशों के स्थानीय लोग जिनको ईमान नसीब हुआ है उनकी क़ुर्बानियों की भी मिसालें हैं।

जर्मनी के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक जमाअत रोएडरेयज़ हाइम में उनको चंदे की तलक़ीन की कि अपना चंदा बढ़ाएं और कमी को दूर करें तो वहां सदर जमाअत की पत्नी जर्मन अहमदी हैं और बड़ी मुख़लिस हैं उन्होंने जब कहा कि हम चाहते हैं कि इस जमाअत का भी चंदा बढ़े और यह भी अच्छा चंदा देने वालों की फ़हरिस्त में शामिल हो जाए तो इस जर्मन अहमदी महिला ने जो नए अहमदी तो नहीं थी उन्हें अहमदी हुए काफ़ी देर हो गई उन्नीस हज़ार यूरो अदा कर दिए। उन्होंने कहा यह मैं ने अपनी कार ख़रीदने के लिए रखे हुए थे लेकिन मेरे दिल में इस क़दर जोश पैदा हुआ है कि हमारी जमाअत का नाम ख़लीफ़ा वक़्त के सामने आ जाए इसलिए मैं पेश कर रही हूँ और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाली बन्नूँ।

फिर जर्मनी से ही एक विद्यार्थी हैं उन्होंने पाँच सौ यूरो का वादा लिखवाया। माता पिता ने कहा कि तुम यह पाँच सौ यूरो किस तरह अदा करोगे? उन्होंने कहा बहरहाल मैं किसी तरह कर दूँगा। कहते हैं कि इस का जवाब अल्लाह तआला की तरफ़ से तुरंत इस तरह मिल गया कि एक हफ़्ता के अंदर अंदर मुझे यूनीवर्सिटी की तरफ़ से फ़ोन आया कि हमने चालीस तालिब-ए-इल्मों का चुनाव किया है जिनको यूनीवर्सिटी की तरफ़ से वज़ीफ़ा दिया जाएगा। अपना एकाऊंट नंबर भेजो ताकि तुम्हें वज़ीफ़ा भिजवा दिया जाए। एक हज़ार यूरो भिजवा रहे ही। कहते हैं अल्लाह तआला ने इसको मुझे दोगुना करके दे दिया।

फिर यूके की भी मिसाल है। बालहम् जमाअत से सदर साहिब कहते हैं कि वक़्फ़-ए-जदीद के टार्गेट में कुछ कमी रह गई थी। इज़ाफ़ी अदायगी कर दी फिर भी कुछ कमी थी। फिर कहते हैं कि अगले दिन लोकल कौंसल की तरफ़ से एक ख़त मौसूल हुआ जिसमें सर्विस चार्जज़ के हवाले से ख़ासी रक़म का मांगी थी और मैं अभी इस बारे में सोच रहा था कि मुझे वक़्फ़-ए-जदीद की तरफ़ से भी पैग़ाम मिला तो मैं ने पहले वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा अदा कर दिया और इस के अगले रोज़ ही कौंसल का दुबारा ख़त मौसूल हुआ और क्षमा की और उन्होंने लिखा कि हमने जो ख़त तुम्हें डीमांड का भेजा था वह ग़लती से भेज दिया था। एडजस्टमंट करने के बाद तुमने हमारा नहीं देना बल्कि हमने तुम्हें एक रक़म देनी है और कहते हैं मैं ने जो वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा दिया था उसकी निसबत वह रक़म दस गुना ज़्यादा थी। इसी तरह अल्लाह तआला ईमान में मज़बूती के लिए कई दफ़ा उसे ख़ुद ही लौटा देता है।

फिर अल्लाह तआला के तुरन्त नवाज़ने की एक और मिसाल इंडिया की है। इन्सपैक्टर साहिब कहते हैं कि मैं वक़्फ़-ए-जदीद के माली वर्ष के अंत पर जमाअत यादगीर में लोगों को तवज्जा दिलाने के लिए पहुंचा तो वहां एक ख़ादिम के पास वह गए और उन्हें चंदा वक़्फ़-ए-जदीद अदा करने की बात की तो उन्हों ने कहा कि इस वक़्त मेरी जेब में केवल पंद्रह सौ हैं जो किसी को देने के लिए रखे हैं और बहुत ज़रूरी देने हैं। आपने चंदा वक़्फ़-ए-जदीद की मांग कर दी है अब मैं सोच रहा हूँ कि मैं क्या करूँ? यदि मैं आपको चंदा अदा करता हूँ तो उस व्यक्ति को कैसे अदा करूँगा और अभी तुरन्त रुपय का मज़ीद इंतिज़ाम नहीं हो सकेगा। कहते हैं लेकिन बहरहाल उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं। मैं अपना चंदा देता हूँ और पंद्रह सौ रुपय अदा कर दिए और चले गए। कहते हैं दूसरे दिन मैं सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-जदीद के हमराह उनकी दुकान पर मुलाक़ात के लिए गया तो उन्हों ने अपनी जेबों से पैसे निकाल के बाहर रखे तो पैसों का ढेर लग गया। कहते हैं कल जब मैं चंदा अदा करके घर पहुंचा हूँ तो मुझे कुछ ऐसी जगहों से रुपया आ गया जो पहले रुका हुआ था, लोगों ने मेरे देने थे और आज कई हज़ार रुपय मेरे पास मौजूद हैं। तो इस तरह अल्लाह तआला ने बरकत अता फ़रमाई।

फिर जो अमीर लोग भी हैं जबकि दुनिया की नज़र में वे इतने अमीर तो नहीं लेकिन जमाअत के लिहाज़ से अमीर हैं। कैरोलाई के एक साहिब हैं। उन्होंने दस लाख रुपया चंदा दिया। उनकी बीवी ईसाइयत से अहमदियत में आई हैं और दुआओं और नमाज़ों में बड़ी दिलचस्पी लेती हैं। बड़ी मुख़लिस हैं। मूसी भी हैं बल्कि दोनों मियां बीवी मूसी हैं। कहते हैं हम उनके घर गए तो उनकी पत्नी ने पाँच लाख रुपय का चैक काट के उनको दे दिया। इन्सपैक्टर ने कहा कि आपके पति पहले ही दस लाख दे चुके हैं तो दुबारा आप भी दे रही हैं तो इस महिला का उत्तर था कि हमें जो नेअमतें भी मिली हैं वे चंदों की बरकतों से ही मिली हैं। इसलिए दिल चाहता है कि बार-बार चंदा देते रहें। इसी की बरकत से हमारे व्यापार में तरक़्क़ी मिल रही है इसलिए हम चंदों से कभी पीछे नहीं हटेंगे।

फिर माली के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि "काई" शहर में हमने जमाअती रेडीयो पर

माली क़ुर्बानी और वक़्फ़-ए-जदीद की एहमियत और उसके उद्देश्य के विषय पर प्रोग्राम किए। इसके बाद कहते हैं कि जमाअतों का दौरा किया तो हसब-ए-तौफ़ीक़ सब जमाअतों ने माली क़ुर्बानी में कुछ न कुछ पेश किया। एक नए अहमदी ने बताया कि जब मैं ने चंदे की तहरीक के बारे में सुना तो मेरे पास नक़द पैसे नहीं थे कि मैं अल्लाह की राह में पेश कर सकता। अत: मैंने निर्णय किया कि मैं भी ज़रूर अपनी तरफ़ से जमाअत अहमदिया को कुछ न कुछ पेश करूँगा और बाक़ीयों से पीछे नहीं रहूँगा। कहते हैं कि मैं जंगल में निकल गया और मैं ने काफ़ी ख़ुशक और पुरानी लकड़ियाँ जमा कीं। फिर वहीं इन लकड़ियों से कोयला तैयार किया और फिर अपने गांव ले आया और जब जमाअत का वफ़द दौरे पर गया तो उन्होंने बीस कोयले की बोरीयां चंदे में पेश कर दीं। जो भी इस ग़रीब आदमी से हो सका उसने किया। बहरहाल उनके लिहाज़ से वह पच्चास हज़ार फ्रॉंक की थीं और कहते हैं कि अब मुझे बड़ी ख़ुशी है कि मैंने भी माली क़ुर्बानी में हिस्सा लिया।

पोलैंड से एक साहिब लिखते हैं कि वर्ष के अंत में मुरब्बी साहिब ने चंदा वक़्फ़-ए-जदीद की तहरीक की तो कहते हैं मेरे पास तक़रीबन एक ज़लूती (zloty) मौजूद थे। यह पोलिश करंसी है। कहते हैं कि उस दिन छब्बीस तारीख़ को जलसा क़ादियान भी था और मेरा ख़िताब भी उन्होंने सुनना था। मोबाइल का पैकेज उनका ख़त्म हो रहा था तो ख़िताब किस तरह सुनें और कहते हैं कि मेरा दिल चाह रहा था कि वह भी ज़रूर सुनूँ। कहते हैं बहरहाल मैंने बीस ज़लूती का पैकेज करवा लिया और अट्ठाईस ज़लूती फी कस के हिसाब से मैंने अपना, बेटे का और बीवी का चंदा अदा कर दिया और यह निर्णय किया कि हम बाक़ी दिनों में अब कुछ नहीं ख़रीदेंगे और घर में मौजूद चीज़ों पर ही गुज़ारा करेंगे लेकिन दिल में यह इच्छा भी थी कि यदि और ज़्यादा रक़म होती तो हम और देते। कहते हैं हमने दुआ की तो अल्लाह तआला ने अपना फ़ज़ल फ़रमाया। कहते हैं 28 दिसंबर को मैं काम से वापस आ रहा था तो एक दोस्त ने मेरी कुछ रक़म बारह ज़लूती देनी थी। उसने कहा मुझे याद नहीं रहता था अब आप यह ले लें। घर आकर कहते हैं मैं ने एकाऊंट देखा तो मुख़्तलिफ़ ज़राए से पता नहीं किस तरह बारह सौ नव्वे ज़लूती मेरे एकाऊंट में आए हुए थे। कहते हैं कि तीन वर्ष से जिस फ़ैक्ट्री में काम कर रहा था उसने क्योंकि कभी इज़ाफ़ी रक़म नहीं दी थी इसलिए चंदा वक़्फ़-ए-जदीद की वजह से यह रक़म मेरे एकाऊंट में आई थी और इस तरह कहते हैं मुझे तेराह सौ ज़लूती मिल गए। कहते हैं फिर मैं ने तीन सौ ज़लूती और चंदा दे दिया। फिर कहते हैं एक और अल्लाह का फ़ज़ल इस तरह हुआ कि मेरा बेटा जहां काम करता है उस की तनख़्वाह में वर्ष में एक दफ़ा अक्तूबर या नवंबर में बढ़होतरी होता है। इस वर्ष अक्तूबर में एक मर्तबा उसकी तनख़्वाह में बढ़होतरी हो चुकी थी लेकिन इकत्तीस दिसंबर को दुबारा उसकी तनख़्वाह में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया। तो यह कहते हैं कि इस बात ने हमारे ईमान में भी इज़ाफ़ा किया।

तनज़ानिया के रीजन श्यानगा में एक जमाअत है। वहां के नए अहमदियों आहिस्ता-आहिस्ता माली निज़ाम में शामिल हो रहे हैं। वहां के मुअल्लिम लिखते हैं कि एक दोस्त रमज़ान साहिब ने पिछले वर्ष बैअत की है। उन्होंने हसब-ए-इस्तिताअत तहरीक जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा लिखवाया और वर्ष के अंत से क़बल अपने वादे से दोगुनी अदायगी भी कर दी। इसी तरह एक और अवसर पर उन्होंने अपनी फ़ैमिली की तरफ़ से एक प्लाट भी जमाअत के नाम कर दिया। गांव के दूसरे लोगों के लिए जहां वे रहते थे यह बड़ी हैरत-अंगेज़ बात थी । कुछ ने प्रेम से उपहास में उनको कहा कि यह व्यक्ति तो इस तरह जल्द-बाज़ी में आकर अपना माल दीन की राह में ख़त्म कर देगा लेकिन उन्होंने मुअल्लिम को बताया कि हक़ीक़तन जमाअत अहमदिया में शामिल हो कर ही उन्हें माली क़ुर्बानी का महत्व और इस का मफ़हूम समझ में आया है। कहते हैं जब से उन्होंने अल्लाह की राह में क़ुर्बानी करनी शुरू की है उनके काम में बहुत बरकत हुई है। लोग कुछ भी कहें लेकिन दरअसल इस वर्ष के दौरान उन्हें मुख़्तलिफ़ जगहों पर मज़ीद प्लाट ख़रीदने और दो मकानात बनवाने की तौफ़ीक़ मिली है। यह सब अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानी करने और एक प्लाट जमाअत के नाम करवाने की बरकत से हुआ है।

फिर सीरालियून का वाक़िया है कि ईमान-ओ-इख़लास मैं किस तरह नए अहमदी तरक़्क़ी कर रहे हैं। उनके रीजन (port loko) के मिशनरी जिब्रील साहिब कहते हैं कि एक नए अहमदी जमाअत को वक़्फ़-ए-जदीद के हवाले से तहरीक की गई। नई जमाअत क़ायम हुई है। नए अहमदियों की जमाअत है। इसी दौरान एक बड़ी आयु के नए अहमदी औरत एक बच्चे का सहारा लेकर मेरे पास पहुंची और कहा कि मैंने कोई वादा तो नहीं लिखवाया लेकिन में यह दो हज़ार लीयौन (leone) वक़्फ़-ए-जदीद के चंदा के लिए देने आई हूँ। लोकल मिशनरी ने कहा कि आपने ख़ुद क्यों तकलीफ़ की, मुझे बुला लेतीं। मैं ख़ुद आपके पास चला आता। तो उसने जवाब दिया। बूढ़ी औरत का यह जवाब सुनें। ग़रीब औरत है और बज़ाहिर अनपढ़पढ़ है। कहती है एक तो मैं थोड़ी सी रक़म देने आई हूँ और वह भी मैं आपको अपने घर बुला कर दूं। मैं तो सारा सवाब लेना चाहती हूँ इसलिए ख़ुद चल कर देने आई हूँ।

आवरी कोस्ट के रीजन सान पेद्रो के मुबल्लिग़ कहते हैं कि जमाअत के एक मैंबर कोली बाली साहिब हैं। कहते हैं : उन्हों ने रमज़ान में मुझे फ़ोन किया और चंदा वक़्फ़-ए-जदीद के मुताल्लिक़ दरयाफ़त किया तो कहा कि क्या रमज़ान में चंदा देना या इज़ाफ़ा करना ज़रूरी है? तो इस पर मैंने उसे कहा कि रमज़ान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उस्वा यही था कि ज़्यादा से ज़्यादा इन्फ़ाक़ का मार्ग धारण किया करते थे। इस की एहमीयत के बारे में बताया और चंदा वक़्फ़-ए-जदीद और तहरीक जदीद के मुताल्लिक़ भी उसको बताया कि किस तरह यह इस्लाम के प्रचार के कामों में ख़र्च होता है और बताया कि कर्तव्य तो नहीं लेकिन अपनी हैसियत के अनुसार ज़्यादा से ज़्यादा माली तहरीकात में दौरान-ए-रमज़ान हिस्सा लेना चाहिए। बहरहाल इस पर उन्हों ने जो पहले ही हर माह बीस हज़ार फ्रॉंक चंदा देते आ रहे थे वादा किया कि आइन्दा केवल माह रमज़ान में ही नहीं बल्कि हर माह बाक़ायदगी से अपने पिछले लाज़िमी चंदा के साथ साथ तीस हज़ार फ्रॉंक ज़ायद रक़म अदा करेंगे। ज़ाइद रक़म विशेषता वक़्फ़-ए-जदीद और तहरीक जदीद की मद में दिया करेंगे और यह भी वादा किया कि इन शा अल्लाह इस वर्ष के अंत तक इस से ज़ायद रक़म बराए चंदा वक़्फ़-ए-जदीद को मज़ीद बढ़ाने की भी कोशिश करेंगे। कहते हैं कि अल्लाह के फ़ज़ल से मौसूफ़ रमज़ान के बाद से ता हाल हर माह आग़ाज़ पर ही ख़ुद फ़िक्र के साथ लाज़िमी चंदा जात की अदायगी करते हैं।

यह इशाअत-ए-इस्लाम की बात है। अख़राजात की बात हुई है तो यहां यह भी बता दूं कि पिछले वर्ष अल्लाह तआला ने जमाअत को एक सौ सतासी (187) मसाजिद बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और इसके अतिरिक्त अफ़्रीक़ा में एक सौ पाँच (105) मसाजिद ज़ेरे तामीर हैं। इसी तरह एक सौ चवालीस (144) मिशन हाऊस क़ायम हुए जिनकी अक्सरीयत अफ़्रीक़ा में है और पैंतालीस (45) मिशन हाऊस निर्माण अधीन भी हैं। इसके अतिरिक्त जहां तुरन्त तौर पर हम मिशन हाऊस बना नहीं सकते वहां किराए पर इमारतें ली जाती हैं। अफ़्रीक़ा के देशों में सात सौ इकत्तीस (731) मिशन हाऊसज़ और मुरब्बी हाऊस किराए पर लिए हैं। दूसरे एशीयन देशों में भी छ: सौ बत्तीस (632) मिशन हाऊसज़ किराए पर हैं। तो बहरहाल यह बता दूं कि सम्भवता वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे का अक्सर हिस्सा अफ़्रीक़ा के देशों पर ख़र्च किया जाता है।

मस्जिद की तामीर इत्यादि की बात हुई है तो यह काम भी उतना आसानी से नहीं हो जाता। मुख़ालिफ़ीन की मुख़ालिफ़त का भी हर जगह सामना करना पड़ता है लेकिन अल्लाह तआला की ख़ातिर ये सब काम जमाअत कर रही है और अल्लाह तआला का जमाअत की तरक़्क़ी का वादा भी है। इसलिए अल्लाह तआला की ख़ास सहायता भी शामिल-ए-हाल रहती है।

कोंगो किंशासा का एक वाक़िया वर्णन कर देता हूँ वहां के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि यहां बानदंदो (bandundo) रीजन में एक जगह जमाअत को क़ायम हुए दो वर्ष का अरसा हुआ है। मस्जिद की तामीर का काम जारी है। वहां सुन्नी मुस्लमानों ने अहमदियों को तकलीफ़ देने और सरकारी दफ़ातिर में हमारे ख़िलाफ़ शिकायत दर्ज करवाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जब कोई हर्बा कामयाब न हुआ तो क़तल तक की धमकियां देने लग गए। बहरहाल मुख़ालिफ़ीन को तो किसी तरह कामयाबी नहीं मिली लेकिन दूसरी तरफ़ मस्जिद की तामीर का काम जारी रहा। एक अहमदी दोस्त जो वहां तामीराती काम की निगरानी कर रहे हैं उन्होंने बताया कि मस्जिद की तामीर के दौरान एक दिन यहां की यूनीवर्सिटी के एक प्रोफ़ैसर जो कि ईसाई हैं वह हमारे पास आए और मस्जिद की तामीर में सहायता करने लग गए यहां तक कि अहमदी जो दूर दूर से रेत लेकर आते थे उनके साथ मिलकर या wheelbarrow को खींचते भी रहे। एक तरफ़ से मुख़ालिफ़ीन अपना किरदार अदा कर रहे हैं दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ग़ैरों के माध्यम से भी काम करवाता चला जाता है। नेक फ़ित्रत लोग इस तरह भी आते हैं।

फिर कैमरोन का एक वाक़िया है। वहां बादंदू सैंज (biodes senge) में मुस्लमानों की अक्सरीयत है। यह वहां एक शहर है दौ आला (douala) इस का एक मुहल्ला है। कहते हैं कि वहां दो वर्ष पूर्व जमाअत का क़ियाम अमल में आया। मस्जिद की तामीर शुरू की तो इलाक़े के ऐडमिनिस्ट्रेटर की तरफ़ से पत्र मौसूल हुआ कि मस्जिद का काम रोक दो। जमाअत ने काम रोक दिया। पता करने पर मालूम हुआ कि मुस्लमानों की तंज़ीम ने गवर्नर साहिब को और समस्त मुताल्लिक़ा ओहदेदारों को पत्र लिखे हैं कि जमाअत एक दहश्तगर्द जमाअत है। उनका इस्लाम से कोई ताल्लुक़

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 7 Thursday 10 Febraury 2022 Issue No.6

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

नहीं, इसलिए मस्जिद नहीं बना सकते। यह प्रोपेगंडा जो इस्लामी मुल्कों का है उनके मौलवी वहां जाते हैं और वे करते रहते हैं। बहरहाल उन्होंने भी फिर ये ख़त लिखे। ख़ुद भी दुआओं में व्यस्त हो गए। राबते इत्यादि भी किए। कहते हैं कि एक माह के बाद ऐडमिनिस्ट्रेटर ने हमें अपने दफ़्तर में बुलाया और मुख़्तलिफ़ तन्ज़ीमों के सरबराहान और मुस्लमानों के चीफ़ इमाम और दूसरे लोगों को भी बुलाया। ऐडमिनिस्ट्रेटर ने एक रिपोर्ट पढ़नी शुरू की और मुस्लमानों की शिकायत पर जो काम रोका गया, यह कहा कि हमने रुकवा तो दिया था लेकिन हमने कैमरोन के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में से रिपोर्टें मँगवाई हैं। जमाअत अहमदिया इंटरनैशनल जमाअत है। दो सौ से ज़ायद मुल्कों में काम कर रही है। पंद्रह वर्ष से कैमरोन में भी काम कर रही है। कैमरोन में भी कई जगह यह मसाजिद बना चुकी है। बहरहाल बताया कि इस तरह ये दीनी ख़िदमात कर रहे हैं। इस के अतिरिक्त जो ख़िदमत-ए-ख़लक़ के काम कर रहे हैं उसके बारे में भी उसने कहा कि बहुत से इलाक़ों में साफ़ पानी के बोर होल भी किए हैं। उन्होंने पंप लगाए हैं। ये लोग यतीमों की परवरिश कर रहे हैं। विद्यार्थियों की इलमी मैदान में सहायता कर रहे हैं। इसी तरह दहशतगर्द तन्ज़ीमों के ख़िलाफ़ हमेशा बात करते हैं। फिर उसने कहा कि जमाअत अमन और रवादारी की तालीम देती है और यह भी कहती है कि तलवार का जिहाद नहीं बल्कि क़लम का जिहाद है। ये सारी बातें उसने उन लोगों को बताएं और फिर यह भी बताया कि मुस्लमान जो हैं, सुलतान और दूसरे लोग भी उनके जलसों में शामिल होते हैं तो इसलिए कोई वजह नहीं कि उनकी मस्जिद को रोका जाए। यहां भी ये मस्जिद बना सकते हैं। कहते हैं जब उसने रिपोर्ट ख़त्म की तो वहां के इस इलाक़े के मुस्लमान लीडर जितने थे खड़े हो गए। उन्होंने कहा कि ये काफ़िर हैं हम उनको काफ़िर समझते हैं और जो रिपोर्ट आपने तैयार की है वे हमसे पूछे बग़ैर बनाई है हम नहीं मानते। बहरहाल ऐडमिनिस्ट्रेटर ने ग़ुस्सा में आकर उन्हें कहा कि मैं अपना काम जानता हूँ और यहां से चले जाओ। बहरहाल वे लोग ख़ामोश हो गए और जमाअत को कहा कि आप मस्जिद बनाएँ।

जमाअत अहमदिया की ख़िदमात का जो नेक असर क़ायम होता है वह हर अक़लमंद को मजबूर करता है कि वे जमाअत की तारीफ़ करे। अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए जब काम किया जाता है तो अल्लाह तआला फिर सहयताकारों की फ़ौज भी भेज देता है और ख़ुद ही उनके मुख़ालिफ़ीन की रोकों को दूर फ़रमाता है।

किस तरह अल्लाह तआला के फ़ज़ल बढ़ते हैं इस का भी एक वाक़िया वर्णन कर दूं। ऊपर वैस्ट रीजन घाना की एक रिपोर्ट है। कहते हैं वहां तब्लीग़ के सिलसिला में साठ से ज़ायद बैअतें मिलीं। गांव में जमाअत की एक छोटी सी कच्ची ईंटों की मस्जिद थी। हमारी कामयाबीयों को देखते हुए ग़ैर अहमदी मुस्लमानों ने हमारी मस्जिद के बिल्कुल सामने एक पुख़्ता और ख़ूबसूरत मस्जिद तामीर करवाई और इस मस्जिद के माध्यम से हमारे नए अहमदियों को अपनी जानिब खींचने की कोशिश की तो जो चंद कमज़ोर नए अहमदियों थे उधर चले भी गए। बाद में जमाअत ने वहां भी बड़ी शानदार और बड़ी मस्जिद बना ली है। अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हमारे अपने मैंबरान तो मस्जिद में आते ही हैं उसके अतिरिक्त ग़ैर अहमदियों लोग भी कसीर संख्या में वहां आना शुरू हो गए हैं और हमारी मस्जिद नमाज़ियों से भर गई है और उनकी मस्जिद बिल्कुल ख़ाली रहने लग गई है या बहुत कम लोग वहां हैं। नए अहमदियों की तालीम-ओ-तर्बीयत के लिए रोज़ाना वहां क्लासें भी अल्लाह के फ़ज़ल से हो रही हैं। जिससे जमाअत की तरक़्क़ी में प्रतिदिन इज़ाफ़ा हो रहा है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल के बहुत से वाक़ियात हैं अल्लाह तआला सच्चे वादों वाला है वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए अपने वादों को पूरा फ़र्मा रहा है और परोक्ष से सहायता भी फ़रमाता है और फ़रमाएगा इं शा अल्लाह। हमें तो वह अवसर देता है कि इस की रज़ा हासिल करने के लिए उसकी राह में ख़र्च करें ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस बनें। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों को जज़ब करने वाले बन सकें।

अब मैं हसब-ए-रिवायत पिछले वर्ष अर्थात 2021 ई. की वक़्फ़-ए-जदीद की मुख़्तसर रिपोर्ट पेश करूँगा। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह जो पिछले वर्ष था यह चोंसठवां वर्ष था और इस वर्ष जनवरी में 2022 ई. का नया वर्ष भी शुरू हो गया है तो पिछले वर्ष की रिपोर्ट यह है कि इस में जमाअत की वक़्फ़-ए-जदीद की जो क़ुर्बानी है वह एक करोड़ बारह लाख सतत्तर हज़ार पाऊंड या तक़रीबन 11.2 मिलियन है और पिछले वर्ष से यह क़ुर्बानी सात लाख बयालिस हज़ार पाऊंड से ज़्यादा है।

दुनिया के इक़तिसादी हालात को यदि देखें तो अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है। इस वर्ष भी बर्तानिया की जमाअत जो है मजमूई वसूली के लिहाज़ से अव्वल पोज़ीशन में है। पाकिस्तान की करंसी क्योंकि गिर गई है इसलिए उनकी पोज़ीशन तो बहुत नीचे चली जाती है इस के बावजूद वह अपनी ताक़त के अनुसार बहुत क़ुर्बानी कर रहे हैं। बहरहाल पोज़ीशन के लिहाज़ से बर्तानिया का नंबर एक है। फिर जर्मनी है और अल्लाह के फ़ज़ल से बर्तानिया ने इस वर्ष काफ़ी अच्छी क़ुर्बानी की है और बहुत अंतर है जर्मनी और बर्तानिया का। फिर नंबर तीन पर कैनेडा है। फिर अमरीका है। फिर भारत है। फिर आस्ट्रेलिया है। इंडोनेशिया है। मिडल ईस्ट की एक जमाअत है। घाना है और बलजीयम।

फी कस अदायगी के लिहाज़ से नंबर एक पर अमरीका है। फिर स्विटज़रलैंड है। फिर बर्तानिया है।

अफ़्रीक़ा में मजमूई वसूली के लिहाज़ से नुमायां जमाअतें जो हैं : नंबर एक घाना है। फिर मारीशस है। फिर नाईजीरिया है। फिर बुर्कीना फासो है। फिर तनज़ानिया है। फिर सीरालियून है। फिर लाइबेरिया है। फिर गेम्बया। फिर योगंडा। अंत में नंबर दस पर बेनिन।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से शामेलीन की संख्या भी चौदह लाख पैंतालीस हज़ार है।

वसूली के लिहाज़ से बर्तानिया की जो दस बड़ी जमाअतें हैं उनकी पोज़ीशन है : इस्लामाबाद नंबर एक पर, फिर फ़ारनहम (farnham) फिर वोस्टर पार्क (worcester park) फिर चीम साउथ (south cheam) फिर आलडर शॉट (aldershot) फिर बर्मिंघम साउथ (birmingham-south) फिर वाल साल (walsall) जलंघम (gillingham) गुलफ़रड (guildford) युल (ewell)

मजमूई वसूली के लिहाज़ से पहले पाँच रीजन जो हैं उनमें पहला रीजन बैत फ़तूह है। नंबर दो पर इस्लामाबाद। फिर मस्जिद फ़ज़ल। फिर बैतुल अहसान। फिर मिडलैंडज़ (midlands)

अतफ़ाल। दफ़्तर अतफ़ाल के लिहाज़ से दस जमाअतें जो हैं इस्लामाबाद नंबर एक पर। आलडर शॉट (aldershot) नंबर दो। फिर फ़ारनहम (farnham) रोहैंपटन (roehampton) फिर गुलफ़रड (guildford) युल (ewell) मचम पार्क (mitcham park) बैतुल फतूह (baitul futuh) वालसाल (walsall) बर्मिंघम वैस्ट (birmingham - west)

वसूली के लिहाज़ से जर्मनी की पाँच लोकल इमारात हैमबर्ग (hamburg) नंबर एक पर। फिर फ्रैंकफ़र्ट (frankfurt) फिर ग्रोस गैराओ (gros gerau) फिर वेज़बादिन (wiesbaden) फिर डटसन बाख (dietzenbach)

वसूली के लिहाज़ से पहली दस जमाअतों की फ़हरिस्त रोडरमारक (röder-mark) नंबर एक पर। फिर रोडगाओ (rodgau) फिर नवयस् (neuss) फिर रवीडरज़ हाइमr (ödersheim) फिर महदी आबाद फ्रेड बर्ग (friedberg) हनाओ (hanau) फ्लोर्स हाइम (flörsheim) फ़र्रअंकनथाल (franken-thal) कोबलनज़ (koblenz) और नेदा (nidda)

दफ़्तर अतफ़ाल में पहली पाँच रीजन हैं हैमबर्ग (hamburg) नंबर एक पर। फिर साउथ वैस्ट ह्यसन् (south west hessen)ताओंसन (taunus) ह्यसन् मिटे (hessen-mitte) रावण लैंड फ़ालिज़ (rheinland - pfalz)

वसूली के लिहाज़ से कैनेडा की इमारतें जो हैं उनमें नंबर एक पर वान है। फिर कैलगरी (calgary) फिर पीस विलेज (peace village) फिर वेनकोवर (vancouver) बरेमटन वैस्ट (brampton - west)

दस बड़ी जमाअतें जो कैनेडा की हैं उनमें हदीक़ा अहमद नंबर एक पर। मिल्टन वैस्ट (milton-west) ब्रैडफोर्ड (bradford) डरहम (durham) मिल्टन ईस्ट (milton east) रजायना (regina) आटवा वैस्ट (otta-wa-west) विन्नी पैग (winnipeg) हमिल्टन माओंटेन (hamilton

शेष पृष्ठ 15 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad